चतुर्विंशति-जिनस्तोत्रशतकम्

(पूजा एवं विधान)

रचयिता

अर्हं योग प्रणेता

पूज्य मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज

आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव

कृति	:	चतुर्विंशति-जिनस्तोत्रशतकम् (पूजा एवं विधान)
आशीर्वाद	:	सन्त शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज
रचयिता	:	अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज
नमनकर्ता	:	**नरेंद्र कुमार जैन एवं राहुल जैन** 204/1, सेक्टर- 16 बी, वसुंधरा, गाज़ियाबाद, उ. प्र.
संस्करण	:	प्रथम,नवंबर 2023
प्रतियाँ	:	1000
आई.एस.बी.एन.	:	978-81-964881-6-1
मूल्य	:	रुपये 135/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव मोबाइल: 9425837476
प्राप्ति स्थान	:	आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव, मोबाइल : 9425837476 (नवीन जैन)

परम पूज्य सन्त शिरोमणि आचार्य
श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

पूर्व नाम	:	ब्र. सर्वेश जी
पिता-माता	:	श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन, श्रीमती सरितादेवी जैन
जन्म	:	13.09.1975, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
जन्म स्थान	:	भोगाँव, जिला-मैनपुरी (उ.प्र.)
शिक्षा	:	बी. एस. सी. (अंग्रेजी माध्यम)
भाई	:	सचिन जैन
बहिन	:	सपना जैन
गृहत्याग	:	09.08.1994
क्षुल्लक दीक्षा	:	09.08.1997, नेमावर
ऐलक दीक्षा	:	05.01.1998, नेमावर
मुनि दीक्षा	:	11.02.1998, माघसुदी 15, बुधवार, मुक्तागिरिजी
दीक्षा गुरु	:	संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

※ संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ

1. लिङ्गपाहुड़ (नन्दिनी टीका)
2. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)
3. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)
4. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)
5. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)
6. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)
7. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय (मंगला टीका)
8. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ')
9. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)
10. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)

※ हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ

1. सत्सकर्म पंजिका
2. दश भक्ति टीका
3. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)
4. कथा कोश
5. सत्य शासन परीक्षा
6. युक्त्यनुशासन
7. नाममाला (भाष्य)
8. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार
9. पात्रकेसरी स्तोत्र
10. अद्याष्टक स्तोत्र
11. संन्यास एषोस्तु किमात्मघात:
12. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (आ. माघनन्दि)
13. नियमसार
14. समयसार
15. परीक्षामुख
16. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

※ पद्यानुवाद

1. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
2. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
3. तत्त्वार्थ सूत्र
4. पात्र केसरी स्तोत्र
5. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
6. श्री वर्धमान स्तोत्र
7. मंगलाष्टक
8. माघनन्दि कृत अभिषेक पाठ
9. उपयोग शतक

※ प्रवचन ग्रंथ

1. वारसानुवेक्खा
2. नई छहढाला प्रवचन
3. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
4. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-2)
5, मनो विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-6)
6. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-3, 4)
7. क्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-7)
8. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
9. प्रवचनसार का सागर (गाथा 61–101)
10. प्रवचनसार का सागर (गाथा 102–137)
11. कर्म बंध विज्ञान

※ संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ

1. स्तुति पथ (इस कृति में निम्नलिखित स्तुतियाँ हैं)

1. प्रार्थना
2. वीराष्टकम्
3. भरताष्टकम्
4. शारदाष्टकम्
5. कुन्दकुन्दाष्टकम्
6. समन्तभद्राष्टकम्
7. शान्त्यष्टकम्
8. ज्ञानाष्टकम्
9. विद्याष्टकम्
10. मौनाष्टकम्
11. निजबोधाष्टकम्
12. आचार्य श्री ज्ञानसागर प्रशस्ति पत्र
13. आचार्य श्री विद्यासागर पूजन
14. श्रायस पथ
15. सिद्धोदयाष्टकम्
16. श्री वर्धमान स्तोत्र
17. अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत)
18. उपयोग शतकम्
19. अर्हं अष्टाङ्ग योग शतकम्
20. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्
21. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)
22. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)

※ प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ

1. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)
2. दार्शनिक प्रतिक्रमण
3. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका 1-6)
4. धम्मकहा
5. प्राकृत रचना भास्कर
6. प्राकृत शिक्षा भाग 1-2-3-4
7. गोम्मटेस पडिमा भत्ति

※ अन्य मौलिक कृतियाँ

1. युगद्रष्टा (भगवान ऋषभदेव पर उपन्यास)
2. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
3. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेन्ट)
4. आलेख पथ (20 सैद्धान्तिक आलेख)
5. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
6. अन्तर्गूंज (भजन एवं हाइकू)
7. लहर पर लहर (कवित संग्रह)
8. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
9. नई छहढाला
10. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
11. मुनि सुब्रतनाथ विधान
12. अर्हम् दोहावली
13. अर्हं ध्यान योग
14. जिंदगी क्या है? (प्रवचन ग्रन्थ)

※ संकलन

1. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा)
2. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद)
3. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय अनुशीलन

※ अंग्रेजी भाषा में

1. Fact of Fate (Article)
2. Twelve Contemplation
3. I Love You My Soul

प्रास्ताविकम्

अनादि-अनिधन जैनधर्म प्राणीमात्र के कल्याणार्थ सनातन रूप से प्रवर्तमान है। संसार में भ्रान्त प्राणी सुख के अन्वेषण में सुखाभासों को अपनाता हुआ जब श्रान्त हो जाता है, तब एकमात्र धर्म ही उसके लिए शरण्य है। दुर्भाग्य का चरम तो तब प्रकट होता है, जब वह धर्म के अभिप्राय से अधर्म अथवा धर्माभास का वरण कर लेता है। वर्तमान परिस्थितियों का यदि सिंहावलोकन किया जाए तो यह स्थिति बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि किस तरह मनुष्य धर्म के अभिधान से विभिन्न मान्यताओं, पन्थों, रीतियों-कुरीतियों के मकड़जाल में उलझकर अपना अमूल्य जीवन स्वाहा कर देता है।

यह परमसौभाग्य का ही विषय मानना चाहिए कि ऐसी विपरीत परिस्थितियों में भी समीचीन धर्म की शरण प्राप्त हो जाए। समीचीन धर्म की प्राप्ति का फल दुःखनिवृत्ति एवं स्थायी सुख की लब्धि है। महान् दिगम्बराचार्य समन्तभद्र स्वामी ने धर्म की उद्घोषणा करते हुए लिखा है-

देशयामि समीचीनं धर्मं कर्मनिबर्हणम्।
संसारदुःखतः सत्वान् यो धरत्युत्तमे सुखे॥

अर्थात् मैं समीचीन धर्म को कहता हूँ जो कर्मों का नाश कर प्राणियों को संसार के दुःखों से दूर कर उत्तम सुख की प्राप्ति कराता है।"

अपने आराध्य की आराधना-पद्धति धर्म का महत्त्वपूर्ण अंग है। जैनागम में श्रमणों के लिए चतुर्विध आराधना का उल्लेख प्राप्त होता है, जो क्रमशः 1. दर्शनाराधना 2. ज्ञानाराधना 3. चारित्राराधना 4. तपाराधना के रूप में विभक्त हैं। ये आराधनाएँ एक आराधक के स्वयं आराध्य बनने का मार्ग प्रशस्त करती हैं। यदि ऐसा न हो तो आराधना करना ही निष्फल हो जाएगा। नित्यस्मरणीय भक्तामरस्तोत्र में कहा गया है-

"नात्यद्भुतं भुवनभूषण! भूतनाथ!
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।

तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति॥१०॥

अर्थात् हे जगत् के भूषण! हे प्राणियों के नाथ! सद्गुणों के द्वारा आपकी स्तुति करने वाले पुरुष पृथ्वी पर यदि आपके समान हो जाते हैं तो इसमें अधिक आश्चर्य नहीं है। क्योंकि उस स्वामी से क्या प्रयोजन, जो इस लोक में अपने अधीन पुरुष को वैभव के द्वारा अपने समान नहीं कर लेता।"

गृहस्थ श्रावकों के लिए भी आराधना के रूप में देवपूजा, गुरुउपासना, स्वाध्याय आदि शास्त्रसम्मत दैनिक उपक्रम निर्धारित हैं, जिन्हें 'आवश्यक' संज्ञा दी गई है। देवपूजा के अन्तर्गत नित्यमह पूजा के साथ ही विशेष अवसरों पर करणीय विधान-पूजाओं का भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुराण ग्रन्थों में चक्रवर्ती, इन्द्र आदि द्वारा विशेष पूजाओं के अनुष्ठान का उल्लेख प्राप्त होता है। आष्टाह्निक पर्व में नन्दीश्वरद्वीप की आराधना हो या इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम आदि महामण्डल विधान, अथवा षोडशकारण, दशलक्षण पर्व आदि पावन अवसरों पर कर्तव्य विधान, ये सब श्रावक जीवन में विशेष पुण्यास्रव के कारण भी होते हैं और उसे आनन्दमय भी बनाते हैं।

यह परमसौभाग्य की बात है कि प्रातःस्मरणीय सन्तशिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज के अन्तेवासी, अर्हं योग प्रणेता, जिनधर्मप्रभावक मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज के करकमलों से साहित्यरचना के नूतन कीर्तिमान स्थापित हो रहे हैं। पूज्य मुनिप्रवर ने संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं में मौलिक साहित्य, टीका-साहित्य, अनुवाद-साहित्य, स्वोपज्ञटीका, पूजा-विधान आदि विभिन्न विधाओं की श्रीवृद्धि की है।

इसी क्रम में पूज्यश्री की नूतन कृति 'चतुर्विंशति-जिनस्तोत्र-शतकम् – पूजा एवं विधान' प्रकाशित होकर श्रावकों को जिन-आराधना का एक महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान करने जा रही है, यह प्रसन्नता का विषय है। प्रस्तुत कृति के विषय में कतिपय तथ्य उल्लेखनीय हैं-

देश, काल की बदलती परिस्थितियों में भाषा-परिवर्तन भी एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। प्राचीन काल में जहाँ प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश भाषाओं

में लिखित साहित्य सहज अवबोध के योग्य था, वहीं आज इन भाषाओं के नाम के साथ ही 'कठिन' विशेषण जुड़ता जा रहा है। इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं हो सकता कि इन भाषाओं के पठन-पाठन, लेखन-मनन का ही त्याग कर दिया जाए। पूज्य गुरुवर ने 'चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रशतकम्' की रचना मूलरूप से संस्कृत भाषा में 108 पद्यों में की है, जिसमें 24 तीर्थंकर भगवन्तों की स्तुति विभिन्न छन्दों में की गई है। उसी के साथ पूज्यश्री ने इसका पद्यानुवाद हिन्दी भाषा में लिखा है, जो हिन्दीभाषी पाठकों के लिए सोने पर सुहागा हो गया है। इस प्रकार प्राचीन धरोहर संस्कृत और अर्वाचीन संस्कृति का यह अनूठा संयोग है।

प्रस्तुत कृति में अभिषेक से आरम्भ कर पूजाविधि-विसर्जन तक सम्पूर्ण प्रक्रिया का समावेश किया गया है। श्रावक को अन्यत्र श्रम करने की आवश्यकता नहीं है।

इस शतक में कुल 108 पद्य हैं, जिनमें उपजाति, इन्द्रवज्रा, वसन्ततिलका, शार्दूलविक्रीडितम्, मन्दाक्रान्ता, स्वागता, प्रहर्षिणी, वंशस्थ, रथोद्धता, पंचचामर, रुचिरा, पुष्पिताग्रा, पृथ्वी और अनुष्टुप् छन्दों में रचना की गई है। यह कृतिकार के ज्ञानसौष्ठव को तो परिलक्षित करता ही है, सहृदय पाठकों को अमृतास्वाद का भी निमित्त बनता है। उक्त छन्दों को सुमधुर लय में यदि शास्त्रीय रीति से कोई एक बार भी गा ले, तो वह आनन्दमग्न अवश्य ही होगा।

कृति का पद्यानुवाद इतना सरल है और मूल रचना के भाव को इस तरह प्रस्तुत करता है कि यदि किसी को संस्कृत भाषा न भी आती हो और वह पद्यानुवाद को पढ़कर संस्कृत पद्य का पाठ करे तो उसे सहज ही अर्थज्ञान हो जाएगा।

इसमें 24 तीर्थंकर भगवन्तों की पंचकल्याणक तिथियों का उल्लेख है, जिससे यह विधान सभी तीर्थंकरों के प्रत्येक कल्याणक के दिन उपादेय है।

निश्चित ही पनागर (मध्यप्रदेश) की वह धरा धन्य है, जहाँ इस महान् कृति की रचना हुई है। इसका प्रकाशन आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव द्वारा किया जा रहा

है, जो पूज्य गुरुवर के आशीर्वाद से जैन साहित्य के प्रकाशन क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान कर रही है। मैं समिति का हृदय से आभारी हूँ, जिन्होंने प्रकाशन का यह श्रमसाध्य कार्य कर जैन समाज को उपकृत किया है।

आशा है जिन भाग्यवान् श्रावकों तक यह कृति पहुँचेगी, इसे पढ़कर वे अपने सौभाग्य की सराहना किए बिना नहीं रह सकेंगे। यह मेरा परमसौभाग्य है कि कृति के प्रकाशन से पूर्व गुरुकृपा के महान् प्रकाश की कतिपय किरणें मुझ तक पहुँची और मैंने उनसे सद्य:स्नात शिशुवत लाभान्वित होने का प्रयास किया है। यह किरणें आजीवन प्राप्त होती रहें, ऐसी भावना के साथ........

18/09/2023

गुरुकृपाभिलाषी

शिखर चन्द जैन 'साहित्याचार्य'

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक, संस्कृत

नई दिल्ली

अनुक्रमणिका

मंगलाष्टक-स्तोत्र	1
अभिषेक क्रिया विधि	6
शांतिधारा	13
विनय पाठ	17
पूजा पीठिका	20
चतुर्विंशति जिन्स्तोत्रशतकम् विधान	26
समुच्चय महार्घ	124
शान्तिपाठ	126
विसर्जन	127

मंगलाष्टक - स्तोत्र

आ. माघनन्दि कृत

(हिन्दी अनुवाद - मुनि श्री प्रणम्यसागर जी)

श्रीमन्नम्रसुरा - सुरेन्द्रमुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा -
भास्वत्पाद - नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिनसिद्ध - सूर्यनुगतास् ते पाठकाः साधवः
स्तुत्या योगिजनैश्च पंच गुरवः कुर्वन्तु ते मंगलं॥1॥

जिनके चरण कमल के नख सब, शशि सम उज्जवल चमक रहे,
देव असुर मुकुटों की मणियों, से शोभित हो विलस रहे।
वे अरिहन्त सिद्ध आचारज, पाठक मुनि अविकारी हो,
पंच परम परमेष्ठी प्रतिदिन, हमको मंगलकारी हों॥1॥

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं रत्नत्रयं पावनं
मुक्ति - श्री - नगराधिनाथ - जिनपत् - युक्तोऽपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्ति - सुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी कुर्वन्तु ते मंगलं॥2॥

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण, निर्मल रत्नत्रय पावन है,
मोक्षप्रदायी यही धर्म है, मुक्तिपुरी का साधन है।
जिनआगम जिनप्रतिमा जिनवर, के आलय अघकारी हों,
पंच परम परमेष्ठी प्रतिदिन, हमको मंगलकारी हों॥2॥

नाभेयादिजिनाः प्रशस्त - वदनाः ख्याताश्चतुर्विंशतिः,
श्रीमन्तो भरतेश्वर - प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।

ये विष्णु - प्रतिविष्णु - लांगलधराः सप्तोत्तरा - विंशतिस्
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रि - षष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलं॥3॥

ऋषभदेव से महावीर तक, तीर्थंकर चौबीस महा,
बारह चक्री नौ नारायण, प्रतिनारायण नवक रहा।
नौ बलभद्र जगत् विख्यात, पुरुष शलाका इन्हें कहो,
त्रेसठ ये सब महापुरुष भी, हमको मंगलकारी हो॥3॥

ये सर्वौषधि - ऋद्धयः सुतपसां, वृद्धिंगताः पंच ये
ये चाष्टांग - महानिमित्त - कुशलाश् चाष्टौ वियच्चारिणः।
पंच ज्ञानधरास् त्रयोऽपि बलिनो ये बुद्धिऋद्धीश्वराः
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलं॥4॥

सर्वौंषधि ऋद्धिधारी मुनि, तप ऋद्धि के भी धारक,
क्रिया विक्रिया चारण ऋद्धि, बुद्धि ऋद्धि के भी साधक।
तप ऋद्धि भी बल ऋद्धि भी, रस ऋद्धि शिवकारी हो,
सप्त ऋद्धियों से शोभित मुनि, हमको मंगलकारी हों॥4॥

ज्योतिर्व्यन्तर भावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः
जम्बू शाल्मलि - चैत्य - शाखिषु तथा वक्षार - रुप्याद्रिषु।
इष्वाकार - गिरौ च कुण्डल - नगे द्वीपे च नंदीश्वरे
शैले ये मनुजोत्तरे जिन - गृहाः कुर्वन्तु ते मंगलं॥5॥

ज्योतिष व्यन्तर भवनवासियों, वैमानिक आवासों में
मेरु कुलाचल चैत्य वृक्ष औ, वक्षारों रुप्याचल में।
इष्वाकार मानुषोत्तर हो, तेरह अठ गिरिधारी हो,
अकृत्रिम सब चैत्यालय भी, हमको मंगलकारी हों॥5॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे
चम्पायां वसुपूज्य - सज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम्।

शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वर - स्यार्हतो
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलं॥6॥

अष्टापद से ऋषभदेव जी, महावीर पावापुर से,
गिरनारी से नेमिप्रभु जी, वासुपूज्य चम्पापुर से।
शेष बीस तीर्थंकर श्रीजी, गिरि सम्मेद विहारी हो,
मोक्षभूमियाँ चौबीसों की, हमको मंगलकारी हों॥6॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्प - दामायते
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः।
देवा यान्ति वशं प्रसन्न - मनसः किं वा बहु ब्रूमहे
धर्मादेव नभोऽपि वर्षति नगैः कुर्वन्तु ते मंगलं॥7॥

सर्प हार बन जाये माला, असि विष अमृत है बनता
शत्रु मित्र सा प्रेमी बनता, देव स्वयं वश है होता।
बहुत कहें क्या रत्न वृष्टि भी, नभ से नित सुखकारी हो
जैन धर्म का है प्रभाव वह, हमको मंगलकारी हों॥7॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर - प्रवेश - महिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलं॥8॥

कल्याणक जो गर्भ समय पर, जन्म समय तीर्थंकर के,
दीक्षा ज्ञान महा कल्याणक, सुर नर पूजित पद जिनके।
देवों द्वारा मोक्ष समय की, पूजा विस्मयकारी हो,
पाँचों कल्यणाक श्री जिन के, हमको मंगलकारी हों॥8॥

इत्थं श्री - जिन - मंगलाष्टकमिदं सौभाग्य - सम्पत्करं
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस् तीर्थंकराणामुषः।

ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै - धर्मार्थ - कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय - रहिता निर्वाणलक्ष्मीरपि॥9॥

इस प्रकार सौभाग्य प्रदायी, मंगल अष्टक जो पढ़ता,
कल्याणक पूजा विधान के, अवसर पर भी है पढ़ता।
अरु प्रभात में सुनता भी जो, धर्म अर्थ कामान्वित हो,
मोक्षपुरी को गमन करे वह, सबको मंगलकारी हो॥9॥

॥इति श्री मंगलाष्टकस्तोत्रं समाप्तम्॥

निर्ग्रन्थो निरतात्मसौख्य - निलयो मुक्त्यातुरस्तारकस्
तीर्थोद्धारक! वीतकामकलहो विज्ञोऽपि गोरक्षकः।
सन्मार्गं हृदि शान्तितो नयति यो भव्यांश्च मुक्तिश्रिये
विद्यासागर - पूज्यपाद - कमलं संस्थाप्य संपूजये॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

अभिषेक प्रारम्भ करने हेतु मंत्रोच्चार विधि

(जल शुद्धि)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौ ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म तिगिच्छ केसरि पुण्डरीक महा पुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रो - हितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णकूला रुप्यकूला रक्ता रक्तोदा क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्ण घटं प्रक्षालित परिपूरितं नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चित ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झ्रं झ्रं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

(हस्त प्रक्षालन)

ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा हस्त प्रक्षालनं करोमि।

(अमृत स्नान)

(अंजुली में जल लेकर शरीर पर छिड़के)

ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय सं हं इवीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

(तिलक मन्त्र)

(नव तिलक करें - शिखा, मस्तक, ग्रीवा, हृदय, दोंनों भुजायें, पीठ, कान, नाभि, हाथ)

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः (मम/यजमानस्य) सर्वांगशुद्धि हेतवः नव तिलकं करोम्यहम्।

अभिषेक क्रिया विधि

आ. माघनन्दि कृत

(हिन्दी अनुवाद - मुनि श्री प्रणम्यसागर जी)

श्रीमन् - नता - मर - शिरस्तट - रत्नदीप्ति -
तोयाव - भासि - चरणाम्बुज - युग्म - मीशम्।
अर्हन्त - मुन्नत - पद - प्रद - माभि - नम्य
तन्मूर्ति - षूद्य - दभिषेक - विधिं - करिष्ये॥1॥

नित्य नम्र सुर सिर मुकुटों की, रत्न दीप्ति से दीपित हैं
जिनके चरण कमल जल जैसे , तरल प्रकाशित पूजित हैं।
शिवपददायी अरिहन्तों को, याद करूँ जिनरूप वरूँ
उनकी ही जिन प्रतिमाओं का मंगल श्री अभिषेक करूँ॥1॥

(प्रातःकालीन देव वन्दना में पूर्व आचार्यों के अनुक्रम से समस्त कर्मों के क्षय के लिए भाव पूजा, स्तवन, वन्दना सहित श्री पंच महागुरु भक्ति का मैं कायोत्सर्ग

करता हूँ।)

(एक कायोत्सर्ग अर्थात् नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

(अभिषेक प्रतिज्ञा)

याः कृत्रिमास् तदितराः प्रतिमा जिनस्य,
संस्नापयन्ति पुरुहूत - मुखा - दयस्ताः।
सद्भाव लब्धि - समयादि - निमित्त योगात्,
तत्रैव - मुज्जवल - धिया कुसुमं क्षिपामि॥2॥

जन्मोत्सवादि समयेषु यदीय - कीर्ति,
सेन्द्राः सुराप्त - मदवा - रणगाः स्तुवन्ति।
तस्याग्रतो जिनपतेः परया विशुद्ध्या,
पुष्पाञ्जलिं मलय - जात - मुपाक्षिपेऽहम्॥3॥

कृत्रिम अकृत्रिम जिन प्रतिमा, जिनवर की है जहाँ कहीं
मुख्य इन्द्र से उनकी होती, नितप्रति ही अभिषेक विधि।
अहो परम सौभाग्य हमारा, काल लब्धि वश से आया
पुष्पांजलि क्षेपण करने को, जिनवर निकट चला आया॥3॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

(श्रीकार लेखन)

श्रीपीठ - क्लृप्ते - विशदाक्ष - तौघैः
श्रीप्रस्तरे पूर्ण - शशांककल्पे।
श्रीवर्तके चन्द्र - मसीति वार्ता
सत्यापयन्तीं श्रियमा - लिखामि॥4॥

तीन जगत् में पावन पर्वत, जो सुमेरु हैं शाश्वत हैं
उसके पाण्डुक वन में देखो, रखी शिला भी पाण्डुक है।
अक्षत सी वह शशि सम शोभे, जिनवर कारण श्रीयुत जो
उस पर श्री लिखकर के मन में, करूँ प्रतिज्ञा विधि युत हो॥4॥

ॐ ह्रीं श्रीकार लेखनं करोमि।

(पीठ स्थापना)

कनकादि - निभं कम्रं, पावनं पुण्य - कारणम्।
स्थापयामि परं पीठं, जिन - स्नपनाय भक्तितः॥5॥

स्वर्ण रजत उत्तम धातु का जो पावन सिंहासन है,
अधर विराजे श्रीजिन फिर भी, नाम धरे सिंहासन है।
वीतराग सर्वज्ञ जिनेश्वर, थाप रहा उस आसन पे,
श्री जिनवर प्रतिमा जी को मैं, लाऊँगा सिर आसन मे॥5॥

ॐ ह्रीं श्रीपीठ स्थापनं करोमि।

(अभिषेक हेतु प्रतिमा स्थापना)

भृंगार - चामर - सुदर्पण - पीठ - कुम्भ -
ताल - ध्वजा - तप - निवारक - भूषिताग्रे।
वर्धस्व - नन्द - जय - पाठ - पदा - वलीभिः
सिंहासने जिन - भवन्त - महं श्रयामि॥6॥

वृषभादि सुवीरान्तान् जन्माप्तौ जिष्णु - चर्चितान्।
स्थापयाम्य - भिषेकाय भक्त्या पीठे महोत्सवम्॥

चामर दर्पण आसन कलशा, झारी मंगल द्रव्य रहे

ध्वजा वीजना तथा छत्र भी, आसन आगे शोभ रहे।
जयवन्तों जिनदेव सदा ही, जय - जयकार करो उर धार
सिंहासन पर आप पधारो, पाप कर्म का कम हो भार॥6॥

ॐ ह्रीं श्री धर्म तीर्थादिनाथ भगवन्निह पाण्डुक - शिला पीठे सिंहासने तिष्ठ तिष्ठ।

(कलश स्थापना)

श्रीतीर्थ - कृत्स्न - पन - वर्य - विधौ सुरेन्द्रः
क्षीराब्धि - वारिभि - रपूरय - दुद्ध - कुम्भान्।
याँस्ता - दृशा - निव विभाव्य यथार्हणीयान्
संस्थापये कुसुम - चन्दन - भूषि - ताग्रान्॥7॥

शात - कुम्भीय - कुम्भौघान् क्षीराब्धेस् तोय - पूरितान्।
स्थापयामि जिन - स्नान - चन्दनादि - सुचर्चितान्॥8॥

श्री जिन के जन्माभिषेक की , विधि हुई जो देवों से
वैसी ही प्रतिमाभिषेक विधि, वैभव भक्ति भावों से।
स्वर्ण कलश में क्षीरोदधि का, प्रासुक जल लेकर आया
चन्दन केसर कुसुम विभूषित, चार कलश में भर लाया॥7 - 8॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि।

(अर्घ्यं)

आनन्द - निर्भर - सुर - प्रमदादि - गानै -
र्वादित्र - पूर - जयशब्द - कल - प्रशस्तैः॥
उद्गीय - मान - जगतीपति - कीर्ति - मेनां
पीठस्थलीं वसु - विधार्चन - योल्लसामि॥9॥

तीन जगत् आनन्दित हो सुर - खचरी करतीं मंगलगान
वादित्रों जय - जय तालों से, सब करते जिनवर सम्मान।
पुण्यफला अरिहन्ता की यह, पुण्य कीर्ति का महाप्रभाव
वसु - विधि अर्घ्य समर्पित जिनवर, बना रहे पूजन का भाव॥9॥

ॐ ह्रीं स्नपनपीठ - स्थिताय जिनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।

(अभिषेक)

कर्म - प्रबन्ध - निगडै - रपि हीन - ताप्तं
ज्ञात्वापि भक्ति - वशतः परमादि - देवम्।
त्वां स्वीय - कल्मष - गणोन्मथ - नाय देव
शुद्धोदकै - रभि - नयामि महा - भिषेकम्॥10॥

कर्म बन्ध से रहित आप हो, परम शुद्ध बाहर भीतर,
जान रहा हूँ फिर भी प्रभुवर, भक्ति भाव से होकर तर।
अपने मन का कालुष धोने, आप्त देव का न्हवन करूँ,
भाव शुद्धि से शुद्ध उदक से, निज - उर जिनवर छवि धरूँ॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्ह वं मंहं हं सं तं तं पं पं वं वं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्ष्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्र - तर - जलेन जिन - मभिषेचयामीति स्वाहा।

तीर्थोत्तम - भवै - र्नीरैः,क्षीर - वारिधि - रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्॥11॥

(निम्न मंत्र पढ़ते हुए सभी लोग अभिषेक करें)

ॐ ह्रीं श्रीं वृषभादिवीरान्तान् जलेन स्नपयामि स्वाहा।

(अभिषेक पश्चात् अर्घ्यं)

पानीय - चन्दन सदक्षत - पुष्प - पुंज -
नैवेद्य - दीपक - सुधूप - फल - व्रजेन।
कर्माष्टक - क्रथन - वीर - मनन्त - शक्तिं
सम्पूजयामि महसा महसां निधानम्॥12॥

जल चन्दन अक्षत पुष्पों का, चरुवर दीप धूप फल ले
आठों का इक अर्घ्य बनाकर, जिनवर सम्मुख कर - कर ले।
अष्ट कर्म से रहित बनूं मैं, और बनूँ तुम सम भगवान्
यही भाव से अर्घ्य चढ़ाता, शीघ्र मिले जिनगुण की खान॥12॥

ॐ ह्रीं अभिषेकान्ते वृषभादि - महावीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जिनबिम्ब परिमार्जन)

हे तीर्थपा निज - यशो - धवली - कृताशाः
सिद्धौषधाश्च भव - दुःख - महा - गदानाम्।
सद्-भव्य-हृज्जनित-पंक-कबन्ध-कल्पा
यूयं जिनाः सतत - शान्तिकरा भवन्तु॥13॥

नत्वा मुहु - र्निज - करै - रमृतोप - मेयैः
स्वच्छै - र्जिनेन्द्र तव चन्द्रकरावदातैः।
शुद्धां - शुकेन विमलेन नितान्त - रम्ये
देहे स्थितान् जल - कणान् परिमार्जयामि॥14॥

(दोहा)

जिन बिम्बों का वस्त्र से, परिमार्जन आनन्द।
कौन कह सके धरा पर, कितना पुण्य प्रबन्ध॥

जिन प्रतिमा जिन सारखी, करो नित्य तुम ध्यान।
हुआ होएगा इसी से, आतम का कल्याण॥13 - 14॥

ॐ ह्रीं अमलांशुकेन जिन - बिम्ब - परिमार्जनं करोमि।

(पुनः जिनबिम्ब यथास्थान विराजमान करना)

स्नानं विधाय भवतोष्ट - सहस्र नाम्ना -
मुच्चारणेन मनसो वचसो विशुद्धिम्।
जिघृक्षु - रिष्टि - मिन तेऽष्टतयीं विधातुं
सिंहासने विधिवदत्र निवेशयामि॥15॥

धन्य हुआ मैं आज जिनेश्वर, करके पावन श्री अभिषेक
एक हजार आठ नामों से, उच्चारण करता सविशेष।
मन वच तन की शुद्धि संभाले, अठ विधि पूजा करने आज
सिंहासन पर पुनः आपको, संस्थापित करता जिनराज॥15॥

ॐ ह्रीं श्रीसिंहासन पीठे जिन - बिम्ब स्थापयामि।

(जिनबिम्ब स्थापना का अर्घ्य)

जल - गंधाक्षतैः पुष्पैश्चरुदीपसुधूपकैः।
फलैरर्घै - र्जिनमर्चेज्, जन्म - दुःखापहानये॥16॥

जलचन्दन अक्षत तथा पुष्प चरु औ दीप।
धूप फलों के अर्घ्य से, श्री जिन चरण समीप॥16॥

ॐ ह्रीं श्री पीठ - स्थित - जिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नत्वा परीत्य निज - नेत्र - ललाटयोश्च
व्याप्तं क्षणेन हरता - दघ - संचयं मे।

शुद्धोदकं जिनपते तव पाद योगाद्
भूयाद् भवातपहरं, घृतमादरेण॥17॥

मुक्ति श्री वनिता करोदकमिदं पुण्याङ्कुरोत्पादकं
नागेन्द्रत्रिदशेन्द्रचक्रपदवी राज्याभिषेकोदकम्।
सम्यग्ज्ञान - चरित्र - दर्शन - लतासंवृद्धिसम्पादकं
कीर्ति श्री जय साधकं तव जिन - स्नानस्य गन्धोदकम्॥18॥

अति सुगन्ध जिन देह से, संस्पर्शित जल जान।
जिन गंधोदक सिर धरुं, धन्य बना दिन - मान॥18॥

ॐ ह्रीं श्री जिन गन्धोदकं स्व नेत्र ललाटे धारयामि।

इमे नेत्रे जाते, सुकृतजलसिक्ते सफलिते
ममेदं मानुष्यं कृतिजनगणादेयमभवत्।
मदीयाद् भल्लाटादशुभतरकार्माटनमभूत्
सदेदृक् पुण्याह - मर्म, भवतु ते पूजनविधौ॥19॥

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

शांतिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। श्री जिनशासनाय नमः। श्री अनेकान्त - धर्माय नमः। अरिहंत मंगलं भवतु सिद्ध मंगलं भवतु साहू मंगलं भवतु आर्हतधर्मो मंगलं भवतु।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमन्त्रेभ्यो नमः सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु। ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोष - कल्मषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्नप्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु - विनाशनाय सर्व - परकृतक्षुद्रोपद्रव विनाशनाय सर्वक्षामडामर - विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सर्वशान्तिं तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु।

ॐ अ ह्रां सि ह्रीं आ ह्रूं उ ह्रौं सा ह्रः जगदापद् - विनाशनाय ह्रीं शान्तिनाथाय नमः सर्व शान्ति कुरु कुरु।

ॐ नमोर्हते भगवते श्रीमते श्री (मंदिर के मूलनायक भगवान का नाम) ऋषभनाथतीर्थकराय, समवशरणशोभिताय, द्वादशगण - परिवेष्टिताय, परमौदारिकशरीरपवित्राय अनन्तचतुष्टय सहिताय शुद्धज्ञान - चेतनाय, ऋषि - आर्यिका - श्रावक - श्राविका प्रमुखचतुः संघोपसर्गहराय श्री शान्तिनाथाय घातिकर्म - रहिताय अघातिकर्मरहिताय, अपवादभयं अपहर - अपहर, अकालमृत्युं अपहर - अपहर, अतिकामं अपहर - अपहर, क्रोधादिकषायं अपहर - अपहर, अग्निवायुभयं अपहर - अपहर, देव - मनुष्य - तिर्यक् - कृतोपसर्गं अपहर - अपहर, प्राकृतिकोपसर्गं अपहर - अपहर, सर्वदुष्टभयं अपहर - अपहर, सर्व क्रूररोगं अपहर - अपहर, सर्वशूलरोगं अपहर - अपहर, सर्वकुष्ठरोगं अपहर - अपहर, सर्ववृक्षपुष्परोगं अपहर - अपहर, भूकम्पभयं अपहर - अपहर, सर्वदुर्भिक्षभयं अपहर - अपहर, अतिवृष्टिभयं अपहर - अपहर, अनावृष्टिभयं अपहर - अपहर, सर्वोदरमस्तकव्याधिं अपहर - अपहर, सर्वांगव्याधिं अपहर - अपहर, व्यन्तरादिबाधां अपहर - अपहर, सर्वासातावेदनीयं अपहर - अपहर, सर्वकर्मरोगं अपहर - अपहर।

हे पार्श्व तीर्थनाथ! सर्वेषां शांतिधारा कुर्वतां पश्यतां च भव्य - जीवानां शांतिं कुरु - कुरु सर्व जनानन्दनं कुरु - कुरु, सर्व भव्यानन्दनं कुरु - कुरु, सर्व गोकुलानन्दनं कुरु - कुरु, सर्व लोकानन्दनं कुरु - कुरु। श्री वर्धमान भगवन्! सर्वेषां स्वस्तिरस्तु, कल्याणमस्तु, जयोस्तु, दीर्घायुरस्तु, वीरवंशवृद्धिरस्तु, ऐश्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धपरमेष्ठिने श्री ऋषभ - अजित - चन्द्रप्रभु - वासुपूज्य - शांतिनाथ - मुनिसुव्रतनाथ - नेमिनाथ - पार्श्वनाथ - वर्धमान - स्वामिने चतुः षष्टिऋद्धिसमन्वितमुनये अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसाधु - जिनधर्म - जिनागम - जिनचैत्य जिनचैत्यालय - नवदेवताभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं एं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहत विद्यायै णमो अरहंताणं ह्रौं सर्वविघ्न शान्तिं जिनशासन - प्रभावनां कुरु कुरु।

(9 बार मंत्र पढ़ें)

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञःकरोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्रः॥

मंगलपाठ

श्रीमज्जिनेन्द्रा हतमोहतन्द्रा सुरेन्द्रसम्पादितदिव्यपूजाः।
फणीन्द्र - योगीन्द्र - नुतप्रभावाः स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥1॥
लब्धात्मलाभा निजसौख्यसिद्धा ये शुद्धबुद्धाः सुनयादिसिद्धाः।
सिद्धाः - समृद्धाः सुगुणैरनन्तैः - स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥2॥
ये पञ्चभेदाञ्चितपुण्यचर्या - माचारयन्ति स्वयमाचरन्तः।
आचारवर्याश्च परान् पदार्थाः स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥3॥
येऽध्यापयन्ति स्वमतप्रसिद्धं विशुद्धशास्त्रं विनयाद्विनेयान्।
सर्वेप्युपाध्याय - पदं प्रपन्नाः स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥4॥
सर्वंसहा वर्जितसर्वसङ्गाः ये सर्वदा ध्यानकृतावधानाः।
सर्वर्द्धयः सर्वगुणाश्च सार्वाः स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥5॥
ये मंगलत्वेन मताश्चतुर्धा लोगोत्तमा ये च चतुः प्रभेदाः।
शरण्यभूताश्च चतुर्विधा ये स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥6॥
लोकत्रयापादितसत्सपर्याः पर्यन्तयाताप्रतिमप्रभावाः।
भावाधिरूढा नव देवतायाः स्वागत्य ते सन्निहिता भवन्तु॥7॥

स्वस्ति पाठ

स्वस्त्यस्तु नः श्री वृषभादिनाथः स्वस्त्यस्तु मोहादिजितो जितार्हन्।
स्वस्त्यस्तु नः शम्भवसम्भवेशः स्वस्त्यस्तु चानन्द्यभिनन्दनोऽर्हन्॥1॥
स्वस्त्यस्तु नः श्री सुमतिर्मतर्द्धिः स्वस्त्यस्तु पद्माभजिनः सपद्मः।
स्वस्त्यस्तु सत्पार्श्वसुपार्श्वदेवः स्वस्त्यस्तु चन्द्राभजिनेन्द्रचन्द्रः॥2॥

स्वस्त्यस्तु पुष्पायुधपुष्पदन्तः स्वस्त्यस्तु नः शीतलशीतलार्हन्।
श्रेयान् जिनः स्वस्ति जनाय भूयात्स्वस्तीन्द्रपूज्यः क्रमवासुपूज्यः॥३॥
स्वस्त्यस्तु नः श्रीविमलोऽमलात्म स्वस्त्यस्तु वै नित्यमनन्तनाथः।
स्वस्त्यस्तु धर्मावह - धर्मनाथः स्वस्त्यस्तु शान्तिर्भवदुःखशान्तिः॥4॥
स्वस्त्यस्तु सोनन्दतु कुन्थुनाथः स्वस्त्यस्तु नः शश्वदरोऽमरार्च्यः।
स्वस्त्यस्तु नः सल्लघुमल्लिनाथः स्वस्त्यस्तु नः श्रीमुनिसुव्रतेशः॥5॥
स्वस्त्यस्तु नः श्री नमिनाथदेवः स्वस्त्यस्तु नः स्पष्टमरिष्टनेमिः।
स्वस्त्यस्तु नः पार्श्वगतेन्द्रपार्श्वः स्वस्त्यस्तु धीवर्धनवर्धमानः॥6॥
श्रीपञ्चकल्याणमहार्घणार्थं द्रागात्तभाग्यातिशयै - रुपेताः।
तीर्थंकरा केवलिनश्च शेषाः स्वस्तिक्रिया नो भृशमावहन्तु॥7॥
ये शुद्धमूलोत्तरसद्गुणाना - माधारभावादनगारसंज्ञाः।
निर्ग्रन्थवर्या निरवद्यचर्याः स्वस्तिक्रियासु - र्जगतेहितानाः॥8॥
ये चाणिमाद्यष्टसविक्रियाढ्यास्तथाक्षयावासमहानसाश्च।
राजर्षयस्ते - सुरराजपूज्याः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥9॥
ये कोष्ठबुद्धयादिचतुविधर्द्धि - रवापुरामर्ष - महौषधर्द्धिः।
ब्रह्मर्षयो ब्रह्मणि तत्परास्ते स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥10॥
जलादिनानाविधचारणा ये ये चारणाग्न्यांबर - चारणाश्च।
देवर्षयस्ते नतदेववृन्दाः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥11॥
सालोकलोकोज्ज्वलनैकतानं प्राप्ता परज्योतिरनन्तबोधम्।
सर्वर्षिवृन्दाः परमर्षयस्ते स्वस्तिक्रियासु - जगते हितानाः॥12॥
श्रेणीद्धयारोहण - सावधानाः कोपोपशान्त्यै क्षपणप्रवीणाः।
ये ते समस्ता मुनयो महान्तः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥13॥
समग्रमध्यक्षमिताख्य दृशः प्रत्यक्षमत्यक्षसुखानुरक्ताः।
मुनीश्वरास्ते जगदेकमान्याः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥14॥

उग्रं च दीप्तं च तपोऽभितप्तं महच्च घोरं च तपश्न्चरन्तः।
तपोधना निर्वृतिसाधनोक्ताः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥15॥
मनोवचः - कायबलप्रकृष्टाः स्पष्टीकृताष्टांगमहानिमित्ताः।
क्षीरामृतस्त्राविमुखा मुनीन्द्राः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥16॥
प्रत्येकबुद्धाः प्रमुखा मुनीन्द्राः शेषाश्च ये ये विविधर्द्धियुक्ताः।
सर्वेऽपि ते सर्वजनीनवृत्ताः स्वस्तिक्रियासु - र्जगते हितानाः॥17॥

नित्य नियम पूजा प्रारम्भ

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्तिवधु के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म - प्रकाश।
थिरता - पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण - सरोज को, नावत तिहुँ - जग - भूप॥5॥
मैं वन्दौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्म - बन्ध के छेदने, और न कछु उपाव॥6॥
भविजन को भव - कूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीन - दयाल अनाथपति, आतम गुण भण्डार॥7॥

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्म - रज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिव - गैल॥8॥
तुम पद - पंकज पूजतैं, विघ्न - रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥१॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रम करि शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु , जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधि विषैं, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजै सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव सिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान्।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुम्हरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत हैं पार।
हा! हा! डूब्यो जात हों, नेक निहार निकार॥19॥

जो मैं कहहूँ और सो, तो न मिटैं उरझार।
मेरी तो तोसों बनी, यातें करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघ्नहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यों पाठ सुखदाय॥22॥

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23॥
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अरहंत देव।
मंगलकारी सिद्धपद, सो वन्दों स्वयमेव॥24॥
मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दों मन - वच - काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगलमय मंगलकरो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल करनतें, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह, भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

परिपुष्पांजलि क्षिपेत्।
(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें)

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय! नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः।(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चत्तारि मंगलं, अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं, साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंत सरणं पव्वज्जामि, सिद्ध सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तं धम्मंसरणं पवज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा।(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत् - पंचनमस्कारं, सर्व - पापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥

अपराजित - मन्त्रोऽयं सर्व - विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः॥3॥
एसो पंच णमोयारो, सव्व - पावप्प - णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्॥4॥

अर्हं - मित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्ध चक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहं॥5॥
कर्माष्टक - विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मीनिकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहं॥6॥
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी - भूत - पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे॥7॥

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

(पंचकल्याणक अर्घ्य)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवलमंगलगान रवाकुले , जिनगृहे कल्याणक महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाण पंचकल्याणकेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पंचपरमेष्ठी अर्घ्य)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिन गृहे जिन इष्ट (नाथ) महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधू पंचपरमेष्ठिभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(जिनसहस्त्रनाम अर्घ्य)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले , जिन गृहे जिननाम महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तत्त्वार्थ सूत्र जी अर्घ्य)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिन गृहे जिन सूत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री उमास्वामीजी विरचित तत्त्वार्थसूत्रं अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(भक्तामर स्तोत्र एवं अन्य समस्त स्तोत्र अर्घ्य)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश, चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्य कैः।
धवल मंगल गान रवाकुले, जिन गृहे जिन स्तोत्र महं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री मानतुंगाचार्य जी विरचित भक्तामर स्तोत्रं एवं समस्तजिनस्तोत्रं अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रतिज्ञा पाठ

श्रीमज्जिनेन्द्र - मभिवंद्य जगत् - त्रयेशं,
स्याद्वाद - नायक - मनन्त - चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ सुदृशां सुकृतैक - हेतुः
जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि॥1॥

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

स्वस्ति त्रिलोक - गुरुवे जिन - पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव - महिमोदय - सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्ज्जित - दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न - ललिताद् - भुत - वैभवाय॥2॥
स्वस्त्युच्छल - द्विमल - बोध - सुधा - प्लवाय,
स्वस्ति स्वभाव - परभाव - विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक - विततैक - चिदुद्गमाय,

स्वस्ति त्रिकाल - सकलायत - विस्तृताय॥3॥
द्रव्यस्य शुद्धि - मधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धि - मधिकामधि - गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्य - वलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थयज्ञ - पुरुषस्य करोमि यज्ञम्॥4॥
अर्हत्पुराण - पुरुषोत्तम - पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्य यमेक एव।
अस्मिज्वलनविमल - केवल - बोध वह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि॥5॥

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

स्वस्ति मंगल - पाठ

(आगे प्रत्येक स्वस्ति उच्चारण के साथ पुष्प क्षेपण करें)

श्रीवृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्रीसम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्रीसुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीपद्मप्रभः।
श्रीसुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीचन्द्रप्रभः।
श्रीपुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशीतलः।
श्रीश्रेयान्ः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवासुपूज्यः।
श्रीविमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअनन्तः।
श्रीधर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीशान्तिः।
श्रीकुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीअरनाथः।
श्रीमल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीमुनिसुव्रतः।
श्रीनमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीनेमिनाथः।
श्रीपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्रीवर्द्धमानः।

॥पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

परमर्षि स्वस्ति मंगल – पाठ

नित्या - प्रकंपाद् - भुत केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्ययशुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥
कोष्ठस्थ धान्योप - ममेक बीजं, संभिन्न संश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरा, दास्वाद - नघ्राण विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥
प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग निमित्तविज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥
जंघानल श्रेणि - फलांबुतंतु, प्रसूनबीजांकुरचारणाह्वाः।
नभोंऽगणस्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि,लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥
सकाम रुपित्व वशित्वमैश्य, प्राकाम्यमन्तर्द्धि मथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणं चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥
आमर्ष - सर्वोषधयस्तथाशी - र्विषविषा दृष्टिविषाविषाश्च।
सखिल्ल विड्जल्ल मलौषधीशाः,स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥९॥
क्षीरं स्त्रवंतोऽत्र घृतं स्त्रवंतो, मधु स्त्रवंतो ऽप्यमृतं स्त्रवंतः।
अक्षीणसंवास महान साश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥10॥

॥इति परमर्षिस्वस्ति मंगल विधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि॥

चतुर्विंशति - जिनस्तोत्रशतकम्
(पूजा एवं विधान)

चतुर्विंशति - जिनस्तोत्रशतकम्

(पूजा एवं विधान)

(मंगल गीता)

स्थापना

तीर्थंकर की महिमा जग में, सबसे बढ़कर गायी है।
देवों राजाओं से बढ़कर जिनवर संस्तुति भायी है॥
ऋषभ अजित संभव देवा, अभिनन्दन सुमति सेवा।
पद्म सुपास चन्द्रजिनदेव, सुविधिशीतल श्रेयस देव॥
वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त, धर्म शान्ति कुन्थु अरु मल्लि।
मुनिसुव्रत नमि नेमी पास, वीर प्रभू थापन मन वास॥
चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की मंगल गीता गाता हूँ॥

ॐ अर्हं ऋषभादिचतुर्विंशति - तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! (इति आह्वाननम्)

ॐ अर्हं ऋषभादिचतुर्विंशति - तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठःठः (इति स्थापनम्)

ॐ अर्हं ऋषभादिचतुर्विंशति - तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधिकरणम्)

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
क्षीर जलधि जल लाया हूँ, मन निर्मल कर आया हूँ।

आप चरण जल धारा का, क्या महत्त्व सुर सारा आ॥
संनिधि से ही अहं गले, दर्शन से सब पाप जले।
जल तो एक बहाना है, पूजन महत बढ़ाना है॥
चौबीसों के चरण कमल में, जल की धारा अर्पित है।
मन चिंतन चितवन हो निर्मल, गुण गण हृदय समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः जन्मजरा - मृत्यु - विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
बहुत सुगन्धित चन्दन है, जिन पद में अभिनन्दन है।
मलयागिरि से भी ज्यादा, महक रहा पर क्या फादा॥
जिनवर तन जब महक रहा, अन्य महक क्या भला कहा ?
चन्दन तुम ढिंग लाया हूँ, पर मन में शर्माया हूँ॥
चौबीसों के चरण कमल में, चन्दन अर्पित करता हूँ।
मन को शीतलता मिल जाए, साम्य आपसा धरता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
धवल अखण्डित तन्दुल ये, चमक रहे ज्यों मोती ये।
पुनः कभी ना उगते हैं, शुद्ध भाव ना डिगते हैं॥
यही सोच कर आया हूँ, धान्य यही अज पाया हूँ।
अक्षत सम निज आत्म रहा, सदा अखण्डित ज्ञात हुआ॥

चौबीसों के चरण कमल में, अक्षत रखने आया हूँ।
ज्ञान अखण्डित होवे मेरा, भाव हृदय भर लाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः अक्षयपदप्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
पुष्प सुगंधि देते हैं, कामी मन हर लेते हैं।
इससे मन मोहित होता, पर चेतन ना हित बोता॥
जिनवर मोह न धरते हैं, पद द्वय पंकज रमते हैं।
अतः आज हम चरणन में, पुष्प चढाते जीवन में॥
चौबीसों के चरण कमल में पुष्प चढाने आया हूँ।
काम भाव का नाश होय सो, मोक्ष भाव मन भाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
क्या लड्डू बरफी खाना खा पीकर भी दुःख पाना।
तृष्णा बहुत बढायी है, भूख कमी ना पायी है॥
क्षुध अनुबंध मिटाने को, आतम भा जगाने को।
पद नैवेद्य चढ़ाता हूँ, तन का मोह नशाता हूँ।
चौबीसों के चरण कमल में, व्यंजन सरस चढ़ाता हूँ।
देह मोह का नाश करु में, तव पद पर ललचाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेधं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
दीप मिले मुझको ऐसा, रूप दिखे उसमे वैसा।
जैसा मेरा रूप प्रभो, या फिर जैसे आप प्रभो॥
मोह कहूँ या राग कहूँ, कौन तिमिर क्या पता कहूँ।
निज संवेदन पाना है, दीप पदों में लाना है॥
चौबीसों के चरण कमल में, नश्वर दीप चढ़ाता हूँ।
अविनश्वर निज रूप दिखा दो, भाव यही मैं भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः मोहान्धकार - विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
कर्म अष्ट को नाशे जो, आग कहाँ दुख जारे जो।
ध्यान भक्ति की आग लगे, तो ही भाव विभाव भगे॥
मैं भी कर्म निवारुँगा, मन की इच्छा मारुँगा।
ज्ञान आपसे पाया है, धूप वही ले आया है॥
चौबीसों के चरण कमल में, धूप अगर सब धरता हूँ।
धूं धूं कर जल जायें मेरे, पूर्व कर्म मन करता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
मेवा फल से क्या होगा, सेवा फल ही फल देगा।
पूजा संस्तुति की सेवा, मिल जाये शिव सुख मेवा॥

फल चढ़ते हैं चरणन में, फल देते हैं चेतन में
कैसा यह सम्बन्ध विभो, मैं तो हूँ नादान प्रभो॥
चौबीसों के चरण कमल में, फल भर भर कर लाया हूँ।
आप अमूल्य, तुच्छ फल मेरे, मूल्य आपसे पाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा

चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की पूजन आज रचाता हूँ॥
जल - चन्दन से अक्षत से, पुष्प चरु से दीपन से।
धूप फलों से अर्घ बना, आप चरण संसर्ग बना॥
संगति जब जिन की पायी, अच्छाई सब मिल आयीं।
नहीं बने यदि मन सच्चा, इससे तो अच्छा बच्चा॥
यह भी वह भी मिला जुलकर, बच्चों सा बन आया हूँ।
तन मन से भोले जिनवर के, पद में अर्घ चढ़ाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादिवर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः अनर्घ्यपद - प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाह

चतुर्विंशतिजिनस्तोत्रशतकम्

१ - ऋषभदेव - स्तुतिः

पिता नामः राजा नाभिराय

माता नामः रानी मरुदेवी

जन्म स्थानः अयोध्या

निर्वाण स्थानः अष्टपद (कैलाश पर्वत)

चिह्नः बैल

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः वटवृक्ष

प्रथम गणधरः वृषभसेन

कल्याणक तिथि

गर्भः आषाढ़ कृष्ण द्वितीया

जन्मः चैत्र कृष्ण नवमी

तपः चैत्र कृष्ण नवमी

केवलज्ञानः फाल्गुनकृष्ण-एकादशी

मोक्षः माघ कृष्ण चतुर्दशी

१ – ऋषभदेव – स्तुतिः

(छन्दः – उपजातिः)

श्रीनाभिसूनो! निखिलेश! माऽव
वृषानुसारिन् वृषधृत् परर्द्ध!।
षट्कर्मविद्या विहिताप्यवामा
भवात्र वीर! प्रणुतो न केन॥१॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब - खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥
नाभिराय के पुत्र हुए जो, ऋषभदेव वृष अनुसारी
सकल जगत के ईश आप ही, वृषभ नाम के थे धारी।
छह कर्मों की विद्या दी थी वृषधारी रक्षा हो आज
वीर प्रभो! अन्तिम तीर्थंकर किससे प्रणुत नहीं हो आप॥
चौबीसों के चरण कमल में नित प्रति शीश झुकाता हूँ।
पनकल्याणक युत जिनवर की मंगल गीता गाता हूँ॥

इति स्तोत्रप्रारम्भे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(इन्द्रवज्रा)

श्रीनाभिराजो जनकः प्रसिद्धो
मातुश्च गर्भे मरुदेविनाम्नः।
आषाढकृष्णद्वितयीतिथौ यः
सर्वार्थसिद्धेः सुखतः प्रयातः॥२॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
ऋषभदेव जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

नाभिराजा पिता प्रसिद्ध जिनके सुत हैं भावी सिद्ध।
माँ मरुदेवी कहलाती देवी से सेवा पातीं॥
आषाढ़ी कृष्णा की थी, दोज तभी गर्भज प्रभुजी।
सरवारथ सिद्धि से आन, माता उदर गए भगवान॥
गर्भ समय के कल्याणक का पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
गर्भ घात ना होय जीव का यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़कृष्ण - द्वितीयायां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवृषभनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा)

चैत्रस्य मासे नवमीदिने स
पक्षेऽसिते जन्म समाप्य भूमौ।
सुपीतदेहो वृषभस्य चिन्ही
तज्जन्मकाले हि गृहीतदीक्षः॥३॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
ऋषभदेव जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
बैलचिह्न धारी देवा, पीत वर्ण तनु सुर सेवा।
चैत मास की नौमी थी, कृष्ण पक्ष की शुभ तिथि थी॥
ऋषभदेव जी जन्म लिए, सुर मेरु अभिषेक किए।
जन्मतिथी पर दीक्षा ली, मानो मुक्ति वधू व्याह ली॥
जन्म और तप कल्याणक का, पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
जन्म मरण का क्रम नश जाये, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णनवम्यां जन्म - तपः कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवृषभनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति)

एकादशी याऽहनि कृष्णपक्षे
कैवल्यमासीदथ फाल्गुने च।
सेनोत्तरो हि वृषभः प्रशिष्यो
नमामि तं वै रचितं श्रुतं यत्॥४॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
ऋषभदेव जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
फागुन का महिना आया, कृष्ण पक्ष ग्यारस लाया।
प्रभु को केवलज्ञान हुआ, समोशरण में नाद हुआ॥
वृषभसेन पहले गणधर, द्वादशांग रचते श्रुतधर।
जिनवर धर्म प्रवाह हुआ, शिवमग नव्य प्रभात हुआ॥
चौथे कल्याणक का खुश हो, पूजन अर्घ - चढ़ाता हूँ।
केवलज्ञान मिले सब जन को, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्ण - एकादश्यां ज्ञान - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवृषभनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजाति)

कैलासशैलेऽसित - पक्षमाघे
चतुर्दशी सापि पवित्रभूता।
पद्मासनेन प्रथमो जिनः स
मोक्षं गतो मे प्रददातु मोक्षम्॥५॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
ऋषभदेव जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

माघ मास की चौदस थी, पद्मासन मुद्रा जिन थी।
कृष्ण पक्ष कैलाश शिखर, श्री जिन का था ध्यान प्रखर॥
अन्तिम शुक्ल ध्यान ध्याये, कर्म सभी तब भग पाये।
लोक अग्र पर आप गए, भव्यों में शुभ भाव भए॥
श्री निर्वाण महाकल्याणक, पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
मोक्ष महा सुख पाऊँ मैं भी, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - कृष्ण - चतुर्दश्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवृषभनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्य पञ्चविंशति दोहावली

शून्य बिना नर जगत में, नहीं बना भगवान।
शून्य बिना नर जगत मे कैसे बने महान॥१॥

कुछ पाने की दौड़ मे, सदा अधूरा होय।
अज्ञानी की यह दशा, तृष्णा पूरित होय॥२॥

ज्ञानी वसता शून्य में, उसका सब संसार।
पर ज्ञानी के चित्त मे, किंचित् ना संसार॥३॥

२ - अजितनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा जितारी/जितशत्रु	**प्रथम गणधरः** सिंहसेन
माता नामः रानी विजयासेना	**कल्याणक तिथि**
जन्म स्थानः अयोध्या	**गर्भः** ज्येष्ठकृष्ण अमावस्या
निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (सिद्धवर कूट)	**जन्मः** माघ शुक्ल दशमी
	तपः माघ शुक्ल दशमी
चिह्नः हाथी	**केवलज्ञानः** पौष शुक्ल एकादशी
वर्णः स्वर्ण	
वृक्षः सप्तपर्ण	**मोक्षः** चैत्र शुक्ल चतुर्थी

२ - अजितनाथ - स्तुतिः

(छन्द - उपजातिः)

साकेतपुर्यामजितो जिनोऽभूत्
जितारितातो विजयाख्यमाता।
ज्येष्ठे च मासेऽसितपक्षपूर्णे
गर्भावतारक्रियया प्रसिद्धः ॥६॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अजितनाथ जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
पिता जितारि राजे थे, पुर साकेत विराजे थे।
विजया रानी जननी है, तीर्थंकर सुत जनती है।
जेठमास का पखवाड़ा, कृष्ण पक्ष का था गाढ़ा।
तभी अमावस की रात्री, श्री जिनवर की थी दात्री॥
गर्भ समय के कल्याणक का, पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
गर्भघात ना होय जीव का, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठकृष्ण - अमावस्यायां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअजित-नाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा)

माघस्य मासे दशमीतिथौ यः
शुक्ले सुपक्षे कनकाभदेहः।
जातः प्रवव्राज गजस्य चिन्ही
तज्जन्ममासे नवमीदिने सः ॥७॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अजितनाथ जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

देह स्वर्ण आभा वाली, फैलाती थी उजियाली।
हाथी का था चिन्ह घना, अजितनाथ पहिचान बना॥
माघ मास की दशमी को, शुक्ल पक्ष की शुभ तिथि को।
जन्म लिया था जिन भगवान, देव मनाये थे कल्याण॥
उसी जन्म मासा पक्षे, नवमी के दिन थे अच्छे।
प्रभु ने मुनिव्रत धारा था, छोड़ दिया जग कारा था॥
जन्म और तप कल्याणक का पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
मंगलमय हो जन्म हमारा यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - शुक्ल - दशमी - दिने जन्म - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअजितनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा)

एकादशी पौषसितस्य पूता
संपूर्णबोधोऽलभतात्र तस्याम्।
सप्तच्छदाधः प्रमुखश्च शिष्यः
श्रीसिंहसेनो बहुभाग्यवान् यः॥८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अजितनाथ जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
पौष शुक्ल की ग्यारस थी, अति पवित्र मणि पारस थी।
सप्तच्छद तरु के नीचे, केवलज्ञान हुए ऊँचे॥
समोशरण सी सभा हुई, प्रभु आभा चहूँ ओर बही।
भाग्यवान श्री गणधरदेव, सिंहसेन करते प्रभु सेव॥
चौथे कल्याणक का सब मिल, पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
बोधि आपसी मिले मुनीश्वर, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - शुक्ल - एकादशी - दिने ज्ञान - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअजितनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा)

सम्मेदशैलात् शुभ - चैत्रमासे
व्युत्सर्गतः पूतचतुर्थ - शुक्लात्।
ध्यानाज्जगाम प्रवरप्रसिद्धं
स्थानं च लोकाग्रतमं विशुद्धम्॥९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अजितनाथ जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
शुक्ल पक्ष चौथी तिथि को, चैतमास उज्ज्वल मिति को।
खड्गासन में काय लिए, शुक्ल ध्यान में डूब गए॥
कर्मनाश से शुद्ध हुए, प्रवर प्रबुद्ध सुसिद्ध हुए।
लोक अग्र पर जा ठहरे, सिद्ध विराजे बिन पहरे॥
सिद्ध प्रभु के शिव कल्याणक, का अब अर्घ चढ़ाता हूँ।
सिद्धगति को प्राप्त करूँ मैं, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - चौथी - दिने मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअजितनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यत्न करो तुम प्रथम ही, बनने नित ही शून्य।
शून्य बने बिन मनुज का, कैसे हो अघ शून्य॥४॥

३ - संभवनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा दृढ़राज

माता नामः रानी सुषेणा

जन्म स्थानः श्रावस्ती

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (धवल कूट)

चिह्नः घोड़ा

वर्णः स्वर्ण

वृक्षः शाल्मलि

प्रथम गणधरः चारुदत्त

कल्याणक तिथि

गर्भः फाल्गुन शुक्ल अष्ट्मी

जन्मः कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा

तपः मार्गशीर्ष पूर्णिमा

केवलज्ञानः कार्तिक कृष्ण चतुर्थी

मोक्षः चैत्र शुक्ल षष्ठी

३ - संभवनाथ - स्तुतिः

(छन्द - उपजातिः)

श्रावस्तिराजो दृढराजनामा
देवी सुषेणा जननी विशुद्धा।
तद्गर्भजातः प्रियसंभवोऽत्र
कृष्णाष्टमी या शुभफाल्गुनस्य॥१०॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
संभवनाथ जिनेश्वर के मैं, कल्याणक मन लाता हूँ॥
श्रावस्ती के राजा थे, नाम ख्यात दृढ़राजा थे।
रानी नाम सुषेणा था, जिन जननी पद लेना था॥
फाल्गुन शुक्ल पक्ष जब था, दिन आठें का शुभ तब था।
स्वप्न देख माँ गर्भवती, हुई सहज ही ज्ञानमती॥
गर्भ समय के कल्याणक का पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ।
संभव जिन गृह रत्न बरसते पुण्य भाव मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - शुक्ल - अष्टम्यां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसंभवनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(इन्द्रवज्रा)

जन्मप्रसङ्गो भुवि कार्तिके स
सत्पूर्णिमायां हि सुवर्णदेही।
पक्षे सितेऽन्ते शुभमार्गशीर्षे
दीक्षां बभाराशुगमस्य चिन्ही॥११॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
संभवनाथ जिनेश्वर के मैं, कल्याणक मन लाता हूँ॥

कनक कान्तिमय काया है, घोड़ा चिह्न न छाया है।
कार्तिकमास पूर्णिमा को, जन्म लिया सुरमहिमा हो॥
जब प्रभु को वैराग्य हुआ, राज - पाट सब त्याग दिया।
मगसिर मास की पूनम को, दीक्षा ले पहुँचे वन को॥
जन्म और दीक्षा कल्याणक, का मैं अर्घ चढ़ाता हूँ।
जन्म मरण का क्रम ये मेटो, प्रभो भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - शुक्ल - पूर्णिमायां जन्म - मंगल - मण्डिताय मार्गशीर्ष - पूर्णिमायां तपोमंगल - मण्डिताय श्रीसंभवनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(उपजातिः)

सुकार्तिके मासि तपोबलेन
कृष्णस्य पक्षस्य दिने चतुर्थे।
चित्तेऽजनि स्वेष्टमहो प्रबोधं
श्रीचारुसेनः प्रमुखो गणेशः ॥१२॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
संभवनाथ जिनेश्वर के मैं, कल्याणक मन लाता हूँ॥
कार्तिक श्रेष्ट मास जब था, कृष्ण पक्ष चौथा दिन था।
पूर्ण ज्ञान जिन ने पाया, इष्ट यही है समझाया॥
चारुसेन मुनि गणधर थे, शिष्य प्रथम ऋद्धिधर थे।
दिव्य ध्वनि जिन झेली थी, द्वादशांग रचि केलि की॥
केवलज्ञान महाकल्याणक, का अब अर्घ चढ़ाता हूँ।
इष्ट ज्ञान में नित रुचि आवे, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - कृष्ण - चतुर्थी - दिने ज्ञान - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसंभवनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्रस्य मासे सितपक्षषष्ठी -
दिने स मोक्षं प्रगतः प्रबुद्धः।
सम्मेदशैलोपरि तीर्थनाथः
खड्गासनेन स्थितिमाप्य योगी॥१३॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
संभवनाथ जिनेश्वर के मैं, कल्याणक मन लाता हूँ॥
चैत मास था धवलिम था, शुक्ल पक्ष षष्ठी दिन था।
तीर्थ क्षेत्र सम्मेद शिखर, संभव तीर्थंकर उस पर॥
खड्गासन् से खड़े हुए, कर्म अघाति भिड़े हुए।
आप अयोगी योगी हो, मुक्ति वधू के भोगी हो॥
मोक्ष महा कल्याणक का, मिलकर अर्घ चढ़ाता हूँ।
मुक्तातम के अष्ट गुणों की, नित्य भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - षष्ठी - दिने निर्वाण - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसंभवनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्य बना वो ही रहा, निर्विकल्प निश्चिन्त।
जो विकल्प चिन्ता करे मूरखता का चिन्ह॥५॥

शून्य बने तब देह में ध्यानी ध्याता नन्त।
एकमेक हो ध्यान से ध्याता पाए नन्त॥६॥

४ - अभिनन्दननाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा स्वयंवर

माता नामः रानी सिद्धार्था

जन्म स्थानः अयोध्या(साकेत)

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (आनंद कूट)

चिह्नः कपि(बंदर)

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः असन

प्रथम गणधरः वज्रनाभि

कल्याणक तिथि

गर्भः वैशाख शुक्ल षष्ठी

जन्मः माघ शुक्ल द्वादशी

तपः माघ शुक्ल द्वादशी

केवलज्ञानः पौष शुक्ल चतुर्दशी

मोक्षः वैशाख शुक्ल षष्ठी

४ – अभिनन्दननाथ – स्तुतिः

(छन्द – शार्दूलविक्रीडितम्)

साकेताख्यपुरी वराऽत्र नृपतेर्नाम स्वयंसंवरः
सिद्धार्था महिषी च तस्य सुखदा पुत्रस्तयोः सौख्यदः।
वैशाखे सितपक्षके स भुवने गर्भे सुजन्माप्तवान्
षष्ठ्यां मामभिनन्दनो जिनवरो शीघ्रं पुनातु त्रिधीः॥१४॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अभिनंदन जिनवर की भक्ति, करने का मन लाता हूँ॥
श्री साकेत नाम नगरी, लगती जैसे लोक परी।
राज स्वयंवर राज करें, सिद्धार्था सुख दान करें॥
शुक्लपक्ष वैशाख महा, छठ को गर्भवती जिनमाँ।
तीन ज्ञान धारी आया, पूत करें जग जिनराया॥
श्री जिन गर्भ महा पूजा का, सुर संग अर्घ चढ़ाता हूँ।
गर्भवास का दुख नश जाए, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख – शुक्ल – षष्ठ्यां गर्भ – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघे शुक्लसुपक्षके सुजननं लेभे तदा द्वादशी
चिन्हं यस्य कपिः सुवर्णवपुषो लोके प्रसिद्धिं गतः।
यः सज्जन्मतिथौ प्रबुध्य भवतो देहाच्च भोगात्तथा
चित्तं च प्रविरज्य शालतरुमाश्रित्यात्मनि स्वे स्थितः॥१५॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अभिनंदन जिनवर की भक्ति, करने का मन लाता हूँ॥

माघ मास का सित पक्षा, जिन जन्मत की जग रक्षा।
तिथि बारस मंगलकारी, कपि चिह्नित जग हितकारी॥
स्वर्णमयी भासुर काया, निज हित में छोड़ी माया।
देह भोग से दूर हुए, शाल वृक्ष अध बैठ गए॥
जन्म और दीक्षा कल्याणक, का अब अर्घ चढ़ाता हूँ।
जिन दीक्षा हो भव अघ हारी, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - शुक्ल - व्दादश्यां जन्म - तपः - कल्याणक प्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यो दीक्षावनमाश्रितोऽसनतरोर्मूले निविश्य स्थिरः
पौषे शुक्लचतुर्दशीतिथिगते यः केवलज्ञानभाक्।
यस्यास्ति प्रमुखो गणाधिपसुधीः श्रीवज्रनाभिर्महान्
स श्रीमानभिनन्दनो यतिवरो पूयात्पवित्रो मनः॥१६॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अभिनंदन जिनवर की भक्ति, करने का मन लाता हूँ॥
दीक्षा वन आश्रित जो थे, असन वृक्ष नीचे बैठे।
पौष धवल की चौदस थी, केवलज्ञान छटा बस थी॥
वज्रनाभिगणधर स्वामी, सप्त ऋद्धि युत जग नामी।
जिनवर धुनि सुन शास्त्र रचे, ज्ञान दिया भवपंक बचे॥
केवलज्ञान महाकल्याणक, का अब अर्घ चढ़ाता हूँ।
ज्ञान गुणों में रमता जाऊँ, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - शुक्ल - चतुर्दश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्मेदाचलचूलिकोपरि सुधीर्योगं निहत्य स्थितो
वैशाखे सितपक्षके शुभतिथौ पष्ठ्यां स मोक्षं गतः।
कायोत्सर्गसमासनेन सुखतः कर्माष्टकानां लयं
तां सर्वोत्तमभूमिमिष्टममहीं संप्रार्थ्यवानप्यहम्॥१७॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
अभिनंदन जिनवर की भक्ति, करने का मन लाता हूँ॥
सम्मेदाचल पर्वत है, कूट बहुत ही ऊपर है।
योग नाशने खड़े हुए, कर्म नाश कर मुक्त हुए॥
वैशाखी की सित छठ थी, शुभ तिथि में ही शिवगति थी।
अष्टम पृथिवी वासी हो, कर्म रहित अविनाशी हो॥
अष्टम वसुधा पाने को मैं, जिनपद अर्घ चढ़ाता हूँ।
अर्चन पूजन वन्दन करके, यही प्रार्थना गाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - शुक्ल - षष्ठी - दिने मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअभिनंदननाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यात्रा कर तू शून्य से शिखर मिले स्वामेव।
जो कुछ भी ना जानता पाता सब स्वामेव॥७॥

५ - सुमतिनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा मेघप्रभ

माता नामः रानी सुमंगला

जन्म स्थानः अयोध्या

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (अविचल कूट)

चिन्हः चक्वा

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः प्रियंगु

प्रथम गणधरः वज्र

कल्याणक तिथि

गर्भः श्रावण शुक्ल द्वितीया

जन्मः चैत्र शुक्ल एकादशी

तपः वैशाख शुक्ल नवमी

केवलज्ञानः चैत्र शुक्ल एकादशी

मोक्षः चैत्र शुक्ल एकादशी

८ - सुमतिनाथ - स्तुतिः

(छन्द - उपजातिः)

मेघप्रभाख्यो नृपतिश्च तस्य
सुमंगलागर्भमहो गतो यः।
शुक्लद्वितीयादिवसे विनीता -
पुर्यां त्रिधीः श्रावणमासपूते॥१८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
सुमतिनाथ के पाँच अनोखे, कल्याणक मन लाता हूँ॥
नगरी सुभग विनीता थी, जनता सुखद सुनीता थी।
नाम मेघप्रभ राजा का, शासन था जिनराजा सा॥
अहो सुमंगला जो रानी, गर्भ समाये त्रिज्ञानी।
सावन शुक्ल पक्ष की दोज, कल्याणक तिथि में सुर मौज॥
गर्भवास के कल्याणक का, मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ।
जिनवर सा हो जीवन सब का, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - शुक्ल - द्वितीया - दिने गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशी या सितचैत्रमासे
तस्यामजन्माऽजनि देवसुमतिः।
वैशाखशुक्लस्य तिथौ नवम्यां
स कोकचिन्ही जगतो विरक्तः॥१९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
सुमतिनाथ के पाँच अनोखे, कल्याणक मन लाता हूँ॥

चैतमास की ग्यारस को, शुक्लपक्ष सुर सेवा को।
देव सुमति का जन्म हुआ, तीन लोक सुख मग्न हुआ॥
वैशाखी शुक्ला नौमी, चकवा चिन्ह धरे स्वामी।
भव तन भोग विरक्त हुए, निज आतम धन रक्त हुए॥
जन्म निष्क्रमण की बेला का, मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ।
जन्म जरा मृतिनाशन हेतू, जिनवर के गुण गाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - एकादश्यां जन्म - मंगल - मण्डिताय वैशाख - शुक्ल - नवम्यां तपो - मंगल - मण्डिताय श्रीसुमतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स जन्मकल्याणकवासरेऽस्मिन्
कैवल्यधामालभत प्रवेकः।
तदा गणेशश्चमरः सभायां
श्रीजैनवाण्या रचनां चकार॥२०॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
सुमतिनाथ के पाँच अनोखे, कल्याणक मन लाता हूँ॥
जन्म महा कल्याणक की, मास पक्ष तिथि सब शुभ थी।
चित्त निजातम लीन हुआ, केवल ज्ञान प्रकाश हुआ॥
गणधर चमर नामधारी, सभा प्रमुख ऋद्धिधारी।
जिनवाणी की रचना की, अंग पूर्व संघटना की॥
केवलज्ञान महाकल्याणक, मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ।
ज्ञान ज्योति जिनवर सी पाऊँ, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - एकादश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स जन्मनो यत्तिथिपक्षमासे
कर्माष्टमुक्तिं तदवाप योगी।
सम्मेदशैला - दघनाशनेन
खड्गासनस्थः किल शुक्ललेश्यः॥२१॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
सुमतिनाथ के पाँच अनोखे, कल्याणक मन लाता हूँ॥
लेश्या शुक्ल सयोगी है, खड्गासन ठिद योगी हैं।
सम्मेदाचल पर्वत से, विगत हुए तन मन वच से॥
जन्म समय की तिथि मासा, पक्ष वही दिन था खासा।
आठ कर्म मुक्ति पाई, ज्ञान चेतना सुख दायी॥
मोक्ष महा कल्याणक का मैं, मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ।
पंडित मरण हमारा होवे, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्लैकादश्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुमतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ जानना से अहं हो यात्रा हो अवरुद्ध।
जो करता अभिमान है खुद ही बना विरुद्ध॥८॥

६ - पद्मप्रभ - स्तुतिः

पिता नामः राजा धारणा

माता नामः रानी सुसीमा

जन्म स्थानः कौशाम्बी

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (मोहन कूट)

चिन्हः लाल कमल

वर्णः लाल

कैवल्यवृक्षः प्रियंगु

प्रथम गणधरः वज्रचामर

कल्याणक तिथि

गर्भः माघ कृष्ण षष्ठी

जन्मः कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी

तपः कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी

केवलज्ञानः चैत्र शुक्ल पूर्णिमा

मोक्षः फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी

६ – पद्मप्रभ – स्तुतिः

(छन्द – शार्दूल – विक्रीडितम्)

कौशाम्बीनगरस्य मुख्यनृपतिः श्रीधारणानामतो
व्यासी – त्तस्य सुवल्लभा गुणवती रानी सुसीमा वरा।
कल्पातीतविमानतश्चयकरस्त्रिज्ञानधारी शिशु –
र्मांघे मासि च कृष्णपक्षसुतिथौ षष्ठ्यां सुगर्भस्थितः॥२२॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति अर्घ चढ़ाता हूँ।
पद्म प्रभु के पन कल्याणक, भाव भक्ति मन लाता हूँ॥
कौशाम्बी नगरी राजा, नाम धारणा अब गाजा।
नाम सुसीमा रानी का, गर्भ हुआ त्रय ज्ञानी का॥
माघ मास कृष्णा छठ थी, गर्भ तिथि मंगल मय थी।
कल्पातीत स्वर्ग चय से, गर्भ विराजे निर्भय से॥
गर्भवास ठिद श्री जिनवर का, महा महोत्सव गाता हूँ।
अर्घ चढ़ाओ मंगल गाओ, सुर सुरियाँ बुलवाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ – कृष्ण – षष्ठ्यां गर्भ – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मासे कार्तिकके त्रयोदशतिथौ कृष्णे सुपक्षे जिनस्
तस्यां जन्म समाप रक्तकमलो बन्धूकपुष्पद्युतिः।
तज्जन्मप्रथिते दिने हि विरतिं भोगांगतो लब्धवान्
देवानामधिदेवतो जिनवरः पद्मप्रभः पालयेत्॥२३॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति अर्घ चढ़ाता हूँ।
पद्म प्रभु के पन कल्याणक, भाव भक्ति मन लाता हूँ॥

कृष्ण पक्ष कार्तिकमासा, तेरस तिथि का दिन खासा।
लाल कमल का चिह्न लिए, लाल कान्तिमय देह लिए॥
पद्म प्रभु जिनराज महा, भोग देह मन विरत हुआ।
तप कल्याणक जिनवर का, जन्म समय की तिथि पर था॥
जन्म और तप कल्याणक की, मंगल गीता गाता हूँ।
तीर्थंकर का महामहोत्सव, सबको याद दिलाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - कृष्ण - त्रयोदश्यां जन्म - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्रे या शुभपूर्णिमा तिथिवरा तस्यां स लेभे वरं
बोधं सौख्यमनन्तशक्तिमतुलं सद्दर्शनं क्षायिकम्।
तत्काले हि गणेशवज्रचमराख्यातो मुनीशर्द्धिको
दिव्यां श्रीजिनवाचमर्थललितां ग्रन्थावधिं चाकरोत्॥२४॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति अर्घ चढ़ाता हूँ।
पद्म प्रभु के पन कल्याणक, भाव भक्ति मन लाता हूँ॥
चैत्र मास की पूनो थी, ध्यान साधना कीनी थी।
बोध सौख्य दर्शन शक्ति, क्षायिक अतुल लिए मुक्ति॥
वज्रचमर गणधर जी थे, गूंथे ग्रन्थ अर्थ जिनके।
ऋद्धि समन्वित मुनिराजा, नमो नमो सधते काजा॥
ज्ञान महा कल्याणक की मैं, मंगल गीता गाता हूँ।
ज्ञान स्वभाव प्रभू सा पाऊँ, भाव शुद्ध मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - पूर्णिमायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पक्षे कृष्णगते चतुर्थदिवसे मासे तथा फाल्गुने
सम्मेदाचलसंस्थितः स मुनिपो व्युत्सर्गसंस्थः सुधीः।
व्युच्छिन्नेन मनोऽङ्गवाक्त्रिविधियोगानामयोगी भवन्
सिद्धोऽभूच्च शुभाशुभै - र्विधिविधै रिक्ताद्विशुद्धात्मता॥२५॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति अर्घ चढ़ाता हूँ।
पद्म प्रभु के पन कल्याणक, भाव भक्ति मन लाता हूँ॥
कृष्ण पक्ष चौथा दिन था, फाल्गुन मास अनूपम था।
सम्मेदाचल संस्थित हो, कायोत्सर्ग अशंकित हो॥
छिन्न किए त्रय योगों को, भिन्न किए विधि रोगों को।
शुद्धातम हो सिद्ध हुए, अर्हं लोक प्रसिद्ध हुए॥
अष्टम वसुधा संस्थित जिन की, मंगल गीता गाता हूँ।
मुक्ति मिले भव भव बंधन से, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - चतुर्थी - दिने मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीपद्मप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तू अनंत दृग ज्ञान में, सुख अनंत का पिंड।
शून्य नहीं ना समझता मन में भरा घमंड॥९॥

७ - सुपार्श्वनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा सुप्रतिष्ठ

माता नाम: रानी पृथिविषेणा

जन्म स्थान: बनारस/वाराणसी

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर
(प्रभास कूट)

चिन्ह: स्वस्तिक

वर्ण: हरित

कैवल्यवृक्ष: शिरीष

प्रथम गणधर: बली

कल्याणक तिथि

गर्भ: भाद्र शुक्ल षष्ठी

जन्म: ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी

तप: ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी

केवलज्ञान: फाल्गुन कृष्ण षष्ठी

मोक्ष: फाल्गुन कृष्ण सप्तमी

७ - सुपार्श्वनाथ - स्तुतिः

(छन्द - वसन्ततिलका)

वाराणसी - नगरराजप - सुप्रतिष्ठः
तस्यास्ति शीलगुणरूपभृता हि पृथ्वी।
भाद्रस्य मासि सितषष्ठि - तिथौ प्रयातः
ग्रैवेयकात्त्रिविधबोधधरः स गर्भे॥२६॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री सुपार्श्व जिनवर के मंगल, पन कल्याणक ध्याता हूँ॥
नगर बनारस के राजा, सुप्रतिष्ठ नामक राजा।
शील रूप गुण धारी हैं, पृथ्वी रानी प्यारी हैं॥
भाद्र शुक्ल छठवी तिथि थी, तीन ज्ञान धारी मति थी।
ग्रेवेयक से चल आया, जीव गर्भ में पधराया॥
श्री जिनवर के गर्भवास का, उत्सव आज मनाता हूँ।
सभी चतुर्विध देवों के संग, जिन जननी मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्र - शुक्ल - षष्ठी - दिने गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स ज्येष्ठमासि जननं लभते स्म शुक्ले
सुद्वादशीतिथिगते हरिताभदेही।
तज्जन्ममासतिथिपक्षमये हि दीक्षां
संप्राप्य संयमनिधौ सुखतोऽतिरेमे॥२७॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री सुपार्श्व जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

जेठ मास वारस तिथि थी, शुक्ल पक्ष मंगल मिति थी।
हरित प्रभामय देह धरे, जिन शिशु से सब नेह करें॥
जन्म मास तिथि पक्ष समा, दीक्षा प्राप्त करी परमा।
संयमनिधि में रमण किए, निज आतम सुख प्रवण लिए॥
जन्म और तप कल्याणक को, सुर गण संग मनाता हूँ।
भव भ्रमणा से आतम छूटे, यही भाव मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - शुक्ल - द्वादश्यां जन्म - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णात्तषष्ठ - दिवसे भुवि फाल्गुने वै
स क्षायिके दृगवबोधसुखात्मनीशः।
स्वस्त्यैकलाञ्छनयुतस्य बली गणेशो
रेजे सुपार्श्वजिनपस्य सभासुमध्ये॥२८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री सुपार्श्व जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
कृष्णपक्ष के छठवे दिन, फागुन मास अनूपम क्षण।
क्षायिक दर्शन ज्ञान सुखी, काल अनंता हुए सुखी॥
गणधर बली विराजे थे, बारह सभा सुसाजे थे।
स्वस्तिक चिन्ह धरे जिनदेव, असंख्यात सुर करते सेव॥
केवलज्ञान महा कल्याणक, बार - बार मन भाता हूँ।
निज चेतन के सुख अनन्त में, डुबकी का मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - षष्ठ्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णाख्यपक्षगतसप्तमवासरे स
मोक्षं गतः सुखदमासि च फाल्गुने हि।
सम्मेदपर्वत - समस्थित - योगनिष्ठः
खड्गासनेन चरमाभ्भवतो विमुक्तः ॥२९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री सुपार्श्व जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
सुखद मास फाल्गुन का था, कृष्ण पक्ष सप्तम दिन था।
श्री सम्मेद शिखर वर था, खड्गासन में जिनवर का॥
योग रोक कर ध्यान किए, क्षण में ही शिव धाम लिए।
कर्म देह तज सिद्ध बने, जग में आप प्रसिद्ध घने॥
मोक्ष महा कल्याणक का मैं, चरणन अर्घ चढ़ाता हूँ।
धाम सुखों का शीघ्र मिले बस, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - सप्तम्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसीलिए अब तुम करो यात्रा का प्रारंभ।
पंख मंत्र अर्हं लगा, उड़खग सम बिन दंभ॥१०॥

८ - चन्द्रप्रभ - स्तुतिः

पिता नामः राजा महासेन

माता नामः रानी लक्ष्मणा

जन्म स्थानः चन्द्रपुरी

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (ललित कूट)

चिन्हः अर्धचन्द्र

वर्णः श्वेत

कैवल्यवृक्षः नाग

प्रथम गणधरः दत्त

कल्याणक तिथि

गर्भः चैत्र कृष्ण पंचामी

जन्मः पौष कृष्ण एकादशी

तपः पौष कृष्ण एकादशी

केवलज्ञानः फाल्गुन कृष्ण सप्तमी

मोक्षः फाल्गुन कृष्ण सप्तमी

८ - चन्द्रप्रभ - स्तुतिः

(छन्द - वसन्ततिलका)

चन्द्रार्कदीप्तसकलार्थमहो हरन्ती
दृष्टा च यस्य तनुकान्तिसुधा पदार्थे।
प्रद्योतनं जगति तेन करोति विश्व -
भक्ता मनन्ति दिशतु प्रसुखं हि मेऽरम्॥३०॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
चन्द्रप्रभ जिन के कल्याणक, पंच हृदय से ध्याता हूँ॥
जो भी जग में दिखता है, सूर्य - चन्द्र सा दिपता है।
देह कान्ति जिन की सबमें, समा रही जड़ चेतन में॥
भक्त आपके मतवाले, मानें श्रेष्ठ देह वाले।
जो सुख भगवन् प्राप्त किए, वही मांगते ध्यान किए।
चन्द्रप्रभजिन वर की थुति में, अतिशय भक्ति लाता हूँ।
जिनवर चरण कमल में हरपल, मन से अर्घ चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ - जिनेन्द्राय अद्भुतदेह - कान्तिधराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूपालकोऽत्र भुवने खलु चन्द्रपुर्या
सेनोत्तरेण नृपतिर्हि महापदस्थः।
यो लक्ष्मणोदरगतः शुभचैत्रमासे
कृष्णस्य पञ्चमदिने चरवैजयन्तः॥३१॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
चन्द्रप्रभ जिन के कल्याणक, पंच हृदय से ध्याता हूँ॥
जो जगती के भूपालक, महासेन नृप नर नायक।
रानी नाम लक्ष्मणा है, चन्द्रपुरी नृप ललना है॥

वैजयन्त नाका तज के, गर्भ विराजे सुख भज के।
चैतमास कृष्णा का दिन, रहा पांचवां रात्रि क्षण॥
गर्भसमय जिन आए तब ही, देव सभी बुलवाता हूँ।
जिनवर उत्सव विन विलम्ब हो, सबको ध्यान दिलाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र कृष्ण - पंचाम्यां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकादशी - तिथिवरेऽसित - पक्षपौषे
जन्माप्तवानिह समार्धशशाङ्क - चिन्ही।
तत्रैव मासतिथिपक्षमिते शशाभो
दैगम्बरेण शमवान् यमवान् बभूव॥३२॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
चन्द्रप्रभ जिन के कल्याणक, पंच हृदय से ध्याता हूँ॥
पौष मास तिथि ग्यारस है, कृष्ण पक्ष शुभ वासर है।
अर्धचन्द्र शुभ लांछन है, जन्म महोत्सव का क्षण है॥
उसी मास तिथि पक्ष अहा, दीक्षा का संयोग रहा।
शमयुत यमयुत शश आभा, पूर्ण दिगम्बर मन थांभा॥
जन्म और तप कल्याणक का, मिलकर अर्घ चढ़ाता हूँ।
जन्म तिथी में दीक्षा होवे, यही भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष कृष्णैकादश्यां जन्म - तपः कल्याणक - प्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णस्य सप्तमदिने शुभफाल्गुनेऽस्मिन्
प्रत्यक्षबोधमखिलं खलु भासमानः।
दन्ताख्यको गणधरः शुशुभे सभायां
सप्तर्धिकः परमसंयम - बोधधारी॥३३॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
चन्द्रप्रभ जिन के कल्याणक, पंच हृदय से ध्याता हूँ॥
फाल्गुन मास पक्ष काला, तिथि सप्तम - चेतन शाला।
उजली पूर्ण बोध वाला, दर्शन सुख की मधुशाला॥
बारह सभा खचाखच है, दत्त नामके गणघर है।
सप्तऋद्धि संयम धारी, जिनमत के हैं अनुचारी॥
ज्ञान महा कल्याणक का अब, अर्घ चढ़ाने आता हूँ।
धर्म शुक्ल द्वय ध्यान धरूंगा, भाव यही मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - सप्तम्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कैवल्यबोध - तिथिमाससमे हि शुक्ले
पक्षे ऽतिसम्मदकरे करिणां प्रसिद्धे।
सम्मेदशैलवरकूटतमे स्थितः स
खड्गासनेन शिवधाम जगाम योगी॥३४॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
चन्द्रप्रभ जिन के कल्याणक, पंच हृदय से ध्याता हूँ॥
मदमाते हाथी डोलें, शिखर सम्मेद तीर्थ हो लें।
ललित कूट खड्गासन से, कर्म विनाशे ध्यानन से॥
आप सयोगी योग हने, बने अयोगी सौख्य घने।
धाम मोक्ष का पाया है, चेतनता रस भाया है॥
मोक्ष महाकल्याणक का ये, अवसर नहीं भुलाता हूँ।
मोदक अर्पण चरणन करके, मोद हृदय भर गाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - सप्तम्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

९ – पुष्पदन्त – स्तुतिः

पिता नामः राजा सुग्रीव

माता नामः रानी रामा

जन्म स्थानः काकन्दी

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (सुप्रभ कूट)

चिन्हः मकर

वर्णः श्वेत

कैवल्यवृक्षः नाग

प्रथम गणधरः विदर्भ

कल्याणक तिथि

गर्भः फाल्गुन कृष्ण नवमी

जन्मः मार्गशीर्ष शुक्ल प्रथमा

तपः मार्गशीर्ष शुक्ल प्रथमा

केवलज्ञानः कार्तिक शुक्ल द्वितीया

मोक्षः भाद्र शुक्ल अष्टमी

९ - पुष्पदन्त - स्तुतिः

(छन्द - वसन्ततिलका)

काकन्दिनामनगरे वसति स्म राजा
सुग्रीव - नामकलितो रमणी च रामा।
कृष्णाख्यपक्ष - नवमी शुभफाल्गुनेऽस्मिन्
गर्भावतारमकरोत् त्रिदिवाद्विमानात्॥३८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
पुष्पदन्त जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
काकन्दी इक नगरी है, प्रजा सुखों की गगरी है।
राजा हैं सुग्रीव सुधी, रामा रानी सौख्य निधि॥
फाल्गुन कृष्णा नवमी को, स्वर्ग चयी हो अवनि को।
गर्भ धारने के क्षण में, स्वप्न दिखाये वे निशि में॥
गर्भ काल का मंगल अवसर, ध्यान धार हर्षाता हूँ।
सुखी रहें सब जीव गर्भ में, यही भाव मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - नवम्यां गर्भ - कल्याणक - मंडिताय श्रीसुविधिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्लस्य चाद्यतिथिके किल मार्गशीर्षे
जन्मावतारसुविधिं सुविधिर्दधानः।
तज्जन्मकालकलिते सुविधाय दीक्षां
सामायिकादिसुयमी व्यभवत् सुयोगी॥३९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
पुष्पदन्त जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

शुक्ल पक्ष मगसिर मासा, एकम तिथि सबसे खासा।
नाम अन्य सुविधि गाया, जन्म लिए शिशु जिन राया॥
जन्म काल के अवसर ही, दीक्षा धारी तज घर ही।
सामायिक चारित्र धनी, श्रेष्ठ यमी चैतन्य रमी॥
जन्म और निष्क्रमण काल की, महिमा आज सुनाता हूँ।
पुष्पदन्त जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्ल - प्रतिपदायां जन्म - तपः कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुविधिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्लद्वितीयदिवसे किल कार्तिके स
कैवल्यबोधमतुलं चिति संचकास्ति।
चन्द्रार्चिशुभ्रवपुषो मकरस्य चिह्नी
तस्याद्य - शिष्यगणनायकतो विदर्भः॥३७॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
पुष्पदन्त जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
कार्तिक मास द्वितीया दिन, शुक्ल पक्ष निज ध्याये जिन।
आतम केवल बोध हुआ, अति विशुद्ध उपयोग हुआ॥
चन्द्र चांदनी आभा थी, मकर चिह्न तनु शोभा थी।
गणधर देव विदर्भ हुए, प्रथम शिष्य सौभाग्य लिए॥
केवलज्ञान महोत्सव का मैं, झुक - झुक अर्घ चढ़ाता हूँ।
ज्ञान किरण प्रभु मुझमें जागे, हृदय हिलोरे खाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - शुक्ल - द्वितीयायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीसुविधिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाद्रस्य पक्षधवले दिवसेऽष्टमेऽस्मिन्
योगं निरुध्य सकलास्त्रवहेतुमन्ते।
सम्मेदपर्वतमहो कुरुते स्म पूतं
व्युत्सर्गतः शिवमहीमनुयात्ययोगी॥३८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
पुष्पदन्त जिन तीर्थंकर के, कल्याणक मन लाता हूँ॥
भाद्र मास का उजला पक्ष, दिवस अष्टमी साधा लक्ष।
आस्त्रव योग सकल रोके, जिन अरिहंत खड़े होके॥
पर्वत श्री सम्मेद शिखर, शुक्ल ध्यान चौथा धर कर।
कर्म बन्ध से मुक्त हुए, गुण अनन्त सब प्रकट हुए॥
आत्म मोक्ष की इस वेला में, सोच - सोच हर्षाता हूँ।
कब मेरा यह समय बनेगा, सिद्ध स्वयं बन ध्याता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रशुक्लाष्टम्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीसुविधिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्य शक्ति है गगन की, शून्य हिमालय देख।
सरिता तक भी शून्य है, शून्य प्रकृति को लेख॥११॥

करलब करके दे रहा, खग भी जो आनन्द।
शून्य लोक में तुम बढ़ो, खग कहता मति मन्द॥१२॥

१० - शीतलनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा दृढरथ

माता नामः रानी सुनन्दा

जन्म स्थानः भद्रिला/भद्रिकापुरी

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (विद्युतवर कूट)

चिन्हः कल्पवृक्ष

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः बिल्व (बेल)

प्रथम गणधरः नाग/अनगार

कल्याणक तिथि

गर्भः चैत्र कृष्ण अष्टमी

जन्मः माघ कृष्ण द्वादशी

तपः माघ कृष्ण द्वादशी

केवलज्ञानः पौष कृष्ण चतुर्दशी

मोक्षः आश्विन शुक्ल अष्टमी

१० – शीतलनाथ – स्तुतिः

(छन्द – द्रुतविलम्वित)

जगति मालवके हि सुभद्रिला
दृढरथ – प्रतिपालक – वल्लभा।
असितचैत्रदिनेऽष्टमके प्रभुः
प्रवसति स्म सुखेन सुगर्भके॥३९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
शीतल जिनवर की छाया में, धर्म भावना भाता हूँ॥
मालव देश पुरी विख्यात, रही भद्रिला नगरी भ्रात।
दृढरथ राजा की रानी, नन्दा शील रूप खानि॥
चैत्र कृष्ण की अष्टम पा, गर्भ स्वच्छ सुर शोभा पा।
देव स्वर्ग से च्युत होकर, गर्भ पधारा खुश होकर॥
गर्भ समय में जननी भी सुर, ललना पा हर्षाती है।
आंगन रत्न वृष्टि को लखकर, तीर्थंकर गुण गाती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र – कृष्ण – अष्टम्यां गर्भमंगल – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीशीतलनाथ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजनि माघसुमासि दशद्वये –
ऽसिततिथौ कनकाभजिनो महान्।
जननकालसमं किल दीक्षितो
जिनपशीतल – नाथ इहोर्जितः॥४०॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
शीतल जिनवर की छाया में, धर्म भावना भाता हूँ॥

माघ मास बारस तिथि में, कृष्ण पक्ष की शुभमिति में।
महा स्वर्ण आभा धारी, कल्याणक उत्सव भारी॥
शीतल नाम देव गाया, कल्पवृक्ष पहिचां पाया।
जन्म तिथि दीक्षा तिथि भी, एक समान बने अतिथि॥
जन्म और तप कल्याणक की, मंगल बेला पाता हूँ।
शीतल चरण कमल को पाके, कल्पवृक्ष फल पाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - कृष्ण - द्वादश्यां जन्म - कल्याणक - तपः कल्याणक - प्राप्ताय श्रीशीतलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

असितपौषसुमासि चतुर्दशी
चिति सुवित् समजायत केवलं।
प्रमुखशिष्यगणाधिप - नागतः
प्रभुवचःश्रुतमत्र विभाजितम्॥४१॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
शीतल जिनवर की छाया में, धर्म भावना भाता हूँ॥
पौष मास रजनी काली, चौदस को आतम ध्या ली।
जगमग केवलज्ञान जगा, तिमिर मोह को दिया भगा॥
गणधर नाग मुनीश्वर थे, प्रभु के वचनामृत वर थे।
शास्त्र रचे धी ऋद्धि से, महा प्रभावक सिद्धि से॥
केवलज्ञान महाकल्याणक का, उल्लास मनाता हूँ।
बारह सभा समस्थित जिनवर, को लख उछला जाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - कृष्ण - चतुर्दश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीशीतलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तदनु चाश्विनशुक्लगताष्टमी
जिनप - शीतलनाथ - सुकेवली।
प्रथित - सम्मदपर्वतसंस्थितः
सकलकर्म निहत्य शिवं गतः ॥४२॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
शीतल जिनवर की छाया में, धर्म भावना भाता हूँ॥
अश्विन शुक्ल अष्टमी को, सम्मेदाचल पर थित हो।
सकल कर्म को नाश किए, शिव लक्ष्मी को प्राप्त किए॥
आठ गुणों में तीन सदा, निज सुख में ही मुदा मुदा।
पर परिणति से मुक्त हुए, निजगुण से संयुक्त हुए॥
मोक्ष महा कल्याणक का मैं, अर्घ अनर्घ चढ़ाता हूँ।
निज सुख से बहुमूल्य नहीं कुछ, हर दिन पर्व मनाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आश्विन - शुक्ल - अष्टम्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीशीतलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पवन शून्य में बह रहा, तरुवर भी है शून्य।
तन का कण कण शून्य है, योगी भी है शून्य॥१३॥

११ - श्रेयोनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा विष्णुराज

माता नाम: रानी विष्णुश्री

जन्म स्थान: सिंहपुरी

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर (संकुल कूट)

चिन्ह: गैंडा

वर्ण: स्वर्ण

कैवल्यवृक्ष: तेंदू

प्रथम गणधर: कुंथु

कल्याणक तिथि

गर्भ: ज्येष्ठ कृष्ण षष्ठी

जन्म: फाल्गुन कृष्ण एकादशी

तप: फाल्गुन कृष्ण एकादशी

केवलज्ञान: माघ कृष्ण अमावस्या

मोक्ष: श्रावण शुक्ल पूर्णिमा

११ - श्रेयोनाथ - स्तुतिः

(छन्द - मन्दाक्रान्ता)

ज्येष्ठे मासे भुवनतिलकः कृष्णपक्षे च षष्ठ्यां
राजा विष्णुर्नयसुनिपुणः सिंहपुर्यां समासीत्।
विष्णुश्रीः सा प्रियतमरमा तस्य राज्ञी सुशीला
स्वर्गात् पुष्पोत्तरवरविमानात् स गर्भे प्रयातः॥४३॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री श्रेयांस जिनेश्वर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
जेठ मास का काला पाख, तिथि छठवीं ने पाई साख।
नीति निपुण विष्णु राजा, सिंहपुरी के महराजा॥
विष्णु श्री रानी प्रिय थी, भुवनतिलक की जननी थी।
पुष्पोत्तर से आए थे, गर्भ महोत्सव पाए थे॥
श्री जिन गर्भ महा कल्याणक, उत्सव का मन लाता हूँ।
चार समूह देव संगति से, हर्ष भक्ति मय भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - कृष्ण - षष्ठी - दिने गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीश्रेयोनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णे पक्षे त्रिभुवनपतिः फाल्गुने विष्णुयोगे
चैकादश्यामजनि सुखतो मातृगर्भात् त्रिबोधः।
पश्चाद् वृद्ध्या विरमतितरां राजभोगाच्छरीरात्
श्रेयो नाथो हितपथगतो जन्मकाले सुवर्णी॥४४॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री श्रेयांस जिनेश्वर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥

फाल्गुन मास पक्ष काला, ग्यारस तिथि में उजियाला।
विष्णु योग में जन्म लिया, तीन ज्ञान सह सौख्य जिया॥
स्वर्ण देह धारी वे नाथ, भोग तजे लुंचे थे माथ।
हो विरक्त हित पथ पाए, आत्म ज्ञान के क्षण आए॥
जन्म और तप धारी प्रभु का, मंगल अर्घ चढ़ाता हूँ।
प्रभु का मंगल सब का मंगल, बने भावना भाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - एकादश्यां जन्म - कल्याणक - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीश्रेयोनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघे मासे निजचिति ततो येन दृष्टो ह्यलोको
प्यामावस्यां सकलभुवनस्यार्थसंदोहसारः।
तस्याद्यो वै गणधरवरः कुंथुनामा सुजातो
येनैव श्रायसपथविधिर्ग्रन्थरूपेण नीतः॥४८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री श्रेयांस जिनेश्वर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
माघ अमावस थी प्यारी, दुनिया आतम में सारी।
देखी गई निजातम में, मुख निर्गत फिर आगम में॥
कुंथुनाम के गणधर ने, गूंथा अंगरु पूर्वन में।
श्रायस पथ फिर बतलाया, मुनि गृहस्थ के मन भाया॥
आतम के कैवल्य धाम का, उत्सव आज मनाता हूँ।
क्षुद्र ज्ञान पर्यायों को तज, शाश्वत भाव सजाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघकृष्णामावस्यायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीश्रेयोनाथ - जिने-न्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीसम्मेदे गिरिवरतले यः समारुह्य काले
शुक्ले पक्षे निजविधिहते श्रावणीपूर्णिमायाम्।
योगं रुद्ध्वा त्रिविधमपि सुध्यानमुख्यात्तुरीयात्
हत्वाशेषं चिति विधिमलं मोक्षधाम प्रयातः ॥४६॥

चौबीसों के चरण कमल में, नित प्रति ध्यान लगाता हूँ।
श्री श्रेयांस जिनेश्वर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
सावन की पूनो आई, पूर्ण आयु बेला आई।
श्री सम्मेद शिखर गिरि पे, ध्यान लगाए आखिर में॥
चौथा ध्यान जभी ध्याया, कर्म सत्त्व नशता पाया।
मोक्ष धाम में आप गए, सदा काल निष्पाप हुए॥
मोक्ष महा उत्सव करने का, समय उचित अब आया है।
जिनवर का गुण गान करें सब, पद अनर्घ मन भाया है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - शुक्ल - पूर्णिमायां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीश्रेयोनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मनुज देह में शून्य मय, नाड़ी शुद्ध प्रवाह।
ध्यान योग्य तव चित्त हो, स्वयं चले शिव राह॥१४॥

पवन थाम कर जब करे, योगी मन का योग।
ज्ञान केन्द्र पर शून्य हो बनता तब समयोग॥१५॥

१२ - वासुपूज्य - स्तुतिः

पिता नामः राजा वसुपूज्य

माता नामः रानी विजया

जन्म स्थानः चम्पापुरी

निर्वाण स्थानः चम्पापुरी (मंदारगिरी)

चिन्हः महिष

वर्णः लाल

कैवल्यवृक्षः कदम्ब

प्रथम गणधरः धर्म

कल्याणक तिथि

गर्भः आषाढ़ कृष्ण षष्ठी

जन्मः फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी

तपः फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी

केवलज्ञानः माघ शुक्ल द्वितीया

मोक्षः भाद्र शुक्ल चतुर्दशी

१२ – वासुपूज्य – स्तुतिः

(छन्द – स्वागता)

अंगदेशनगरी – वरचम्पा –
भूनरेन्द्र – वसुपूज्यसुपत्नी।
कौ शुचौ विजयोदरयातः
कृष्णपक्षगतषष्ठदिने सः ॥४७॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
वासुपूज्य जिन चंपापुर में, पन कल्याणक गाता हूँ॥
अंगदेश नगरी चम्पा, रानी विजया ज्यों शम्पा।
राजा श्री वसुपूज्य महा गर्भ पधारे देव अहा॥
मास रहा आषाढ वदी, छठ की तिथि पावन कर दी।
रत्नवृष्टि औ माँ सेवा, घर - घर में सुख दें देवा॥
वासुपूज्य जिनवर का अब मैं, गर्भ समय मन लाता हूँ।
कल्याणक देवों से पूजा, ध्या कर मन हर्षाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ – कृष्ण – षष्ठयां गर्भ – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीवासुपूज्य – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णफाल्गुन – सुमासदिनेषु
यश्चतुर्दशदिनेऽजनि लोके।
जन्मवासरतिथौ मुनिदीक्षा
वासुपूज्यसुधिया सुगृहीता ॥४८॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
वासुपूज्य जिन चंपापुर में, पन कल्याणक गाता हूँ॥

फाल्गुन का वह मास रहा, चौदस काला पक्ष कहा।
नव प्रभात के सूरज सी, देहकान्ति जिनकी वर थी॥
जन्म तिथी ही दीक्षा की, सहज बनी जिन दीक्षा ली।
चार ज्ञान धारी मुनिराज, सप्त ऋद्धि विध साधे काज॥
जन्म और दीक्षा की बेला, मंगल महा कहाती है।
याद करे उसका हो मंगल, जिनवाणी यूं गाती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां जन्मकल्याणक - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवासुपूज्य - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

माघशुक्लदिवसे द्वितये यो
ज्ञानपूर्तिमनघां चिति लेभे।
धर्मनामगणपः शुशुभे वै
मुख्यशिष्यपदमाप्य सभायाम्॥४९॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
वासुपूज्य जिन चंपापुर में, पन कल्याणक गाता हूँ॥
शुक्ल पक्ष का पखवाड़ा, माघ दोज का था जाड़ा।
ज्ञान अनघ परिपूर्ण लिया, तन ने जग सब लाल किया॥
धर्ममूर्ति जिन सभा लगी, उपदेशों से बोधि जगी।
धर्म नाम गणधर जी का, लगे सभी को अति नीका॥
अतिशय मण्डित चौंतीसों से, समवसरण में ध्याता हूँ।
वासुपूज्य केवलज्ञानी के, चरणन शीश नवाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - शुक्ल - द्वितीयायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीवासुपूज्य - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश्चतुर्दशदिने सितपक्षे
सिद्धभूमिमवसत् शुभभाद्रे।
रक्तवर्णयुतदेह! जिनेश!
रक्ष रक्ष महिषेण सुचिह्नि्॥५०॥

चौबीसों के चरण कमल में, नितप्रति ध्यान लगाता हूँ।
वासुपूज्य जिन चंपापुर में, पन कल्याणक गाता हूँ॥
भाद्र मास का उजियाला, पक्ष तिथी चौदस वाला।
महिष चिह्न धारी स्वामी, सिद्धि भूमि पथ के गामी॥
पाँचों कल्याणक जिनके, चम्पानगरी में दमके।
वे जिनेश! मेरी रक्षा, करें बढ़ायें गुण कक्षा॥
सिद्ध वधू के प्यारे राया, रक्त वर्ण तन ध्याता हूँ।
वर्ण रहित चेतनता पाई, सिद्ध प्रभू मन लाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्र - शुक्ल - चतुर्दश्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवासुपूज्य - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दो द्रव्यों को जोड़ना शून्य शक्ति का काम।
अंक गणित में भी रहा शून्य शक्ति का नाम॥१६॥

शून्य रहे कुछ पेट तो, स्वस्थ रहे इन्सान।
जठर अग्नि जिन्दा रहे, तो खाने में शान॥१७॥

१३ - विमलनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा कृतवर्मा

माता नामः रानी जयश्यामा

जन्म स्थानः कंपिला

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (सुवीर कूट)

चिन्हः सुगर

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः जम्बू

प्रथम गणधरः मन्दर

कल्याणक तिथि

गर्भः जयेष्ठ कृष्ण दशमी

जन्मः माघ शुक्ल चतुर्थी

तपः माघ शुक्ल चतुर्थी

केवलज्ञानः माघ कृष्ण षष्ठी

मोक्षः आषाढ़ कृष्णा अष्टमी

१३ - विमलनाथ - स्तुतिः

(छन्द - प्रहर्षिणी)

काम्पिल्ये वरनृपतिः कृतानुवर्मा
श्यामामातुरुदरगोऽसिते दशम्याम्।
ज्येष्ठे मासि विमलसंज्ञको जिनेशः
षण्मासाद्धि पुरत एव रत्नवृष्टिः॥५१॥

चौबीसों के चरणों में, मैं झुकझुक शीश नवाता हूँ।
विमलनाम तीर्थंकर का मैं, लघु चरित्र अब ध्याता हूँ॥
नगर कंपिला कृतवर्मा, वर राजा को प्रिय धर्मा।
माता श्यामा उदर गए, देवगती से निकर गए॥
जेठ मास की गर्मी थी, कृष्ण पक्ष की दशमी थी।
छहमासा पहले से ही, वर्षा रत्नों की सोही॥
विमल नाम धारी जिनवर की, मंगल गीता गाता हूँ।
कल्याणक जो गर्भ समय का, उसको अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं जयेष्ठ - कृष्ण - दशम्यां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीविमलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघे मासि धवलपक्षके चतुर्थ्यां
जन्मान्त्यं सकलभवेषु सोऽपि लब्ध्वा।
दीक्षां जन्मतिथिसमेऽग्रहीद् जैनीं
चैतन्यात्मनि रमणं हि येन नीतम्॥५२॥

चौबीसों के चरणों में, मैं झुकझुक शीश नवाता हूँ।
विमलनाम तीर्थंकर का मैं, लघु चरित्र अब ध्याता हूँ॥

पक्ष धवल अति चौथा दिन, माघ माह जनमे थे जिन।
सकल भवों में अंतिम था, जन्म अन्त करने को था॥
दीक्षा तिथि जो जन्म तिथी, राजपाट तज बने कृती।
तन मन के सब मोह भगे, चेतन में चैतन्य जगे॥
जन्म और निष्क्रमण काल की, गाथा आज सुनाता हूँ।
विमल - विमल हों भाव सभी के, सादर अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - शुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीविमलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघे मासि धवलपक्षषष्ठवारे
कैवल्यं चिति सुषुवे सुखावहं यत्।
मन्दरार्यगणधरः सुशोभते स्म
यो मुख्यः सदसि विभोर्हि धर्मवाहः॥८३॥

चौबीसों के चरणों में मैं, झुकझुक शीश नवाता हूँ।
विमलनाम तीर्थंकर का मैं, लघु चरित्र अब ध्याता हूँ॥
माघ मास की छठ आई, पक्ष शुक्ल की तिथि भाई।
उपजा केवल ज्ञान महा, लोकालोक प्रकाशक हाँ॥
मन्दर गणधर जी शोभें, बारह सभा लगी नभ में।
धर्म पन्थ विस्तार किया, भव्यजीव उद्धार किया॥
अष्ट प्रातिहार्यों से शोभित, गन्धकुटी जिन ध्याता हूँ।
विमलनाथ तीर्थंकर पद पा, मैं प्रणम्य हो जाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - कृष्ण - षष्ठ्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीविमलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आषाढेऽष्टमदिवसे च कृष्णपक्षे
सम्मेदे गिरिशिखरे प्रमुक्तिभाक्सः।
कायोत्सर्ग - वर - समाधि - शुद्धि - योगैः
कर्माष्टप्रहणनतः शिवं सुलेभे॥८४॥

चौबीसों के चरणों में, मैं झुकझुक शीश नवाता हूँ।
विमलनाम तीर्थंकर का मैं, लघु चरित्र अब ध्याता हूँ॥
कृष्ण पक्ष आषाढी मास, पर्व अष्टमी की तिथि खास।
गिरि सम्मेद शिखर जिनराज, खड़े हुए थे योगीराज॥
शुद्ध योग से कर्म हने, आत्म देश सब हुए घने।
सिद्ध भूमि क्षण में पाए, पाए ध्येय न कुछ ध्याये॥
सिद्धेश्वर श्री विमलनाथ के, पद पंकज चित लाता हूँ।
मुक्तिधाम के कंत जिनेश्वर, खुश हो अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ - कृष्णा - अष्टम्यां मोक्षकल्याणक - प्राप्ताय श्रीविमलनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्य नाक के छिद्र है, शून्य नेत्र है गोल।
शून्य तत्व की शक्ति है दिखती जहाँ खगोल॥ १८॥

अंतरिक्ष भी शून्य है, रवि शशि सम सब गोल।
गोल शून्य में जीव का भ्रमण होय नित गोल॥ १९॥

१४ - अनन्तनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा सिंहसेन

माता नाम: रानी सर्वयशा

जन्म स्थान: अयोध्या

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर (स्वयंभू कूट)

चिन्ह: सेंही

वर्ण: स्वर्ण

कैवल्यवृक्ष: अश्वत्थ(पीपल)

प्रथम गणधर: जयार्य

कल्याणक तिथि

गर्भ: कार्तिक कृष्ण प्रथमा

जन्म: ज्येष्ठ कृष्ण द्वादशी

तप: ज्येष्ठ कृष्ण द्वादश्यां

केवलज्ञान: चैत्र कृष्ण अमावस्या

मोक्ष: चैत्र कृष्ण अमावस्या

१४ – अनन्तनाथ – स्तुतिः

(छन्द – वंशस्थ)

अयोध्यपुर्यां नृपसिंहसेनतः
सुवल्लभा – सर्वयशा – शुभोदरे।
अशुक्लपक्षैक – दिने सुकार्तिके
सुखेन पुष्पोत्तरतोऽवतीर्णवान्॥५५॥

चौबीसों के श्री चरणों में, भ्रमर सरीखा गाता हूँ।
श्री अनन्तजित् जिनवर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
पुरी अयोध्या प्यारी है, शाश्वत जिनभू न्यारी है।
सिंहसेन नृप प्रियारानी, सर्वयशा है कल्याणी॥
कार्तिक कृष्णा एकम को, गर्भ ठहर जाता है जो।
पुष्पोत्तर से आते वो, तीर्थंकर विधि बांधे जो॥
गर्भकाल से पहिले ही जो, निज प्रभाव दिखलाते हैं।
उन तीर्थंकर की पूजा में, देव नरोत्तम आते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक – कृष्ण – प्रतिपदायां गर्भ – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीअनंतनाथ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स द्वादशी ज्येष्ठसितेतरागता
सुजन्म तस्यां विदधेऽप्यनन्तजित्।
प्रगृह्य दीक्षां जननेन वै समं
निजेनुरक्तः कनकाभदेहकः॥५६॥

चौबीसों के श्री चरणों में, भ्रमर सरीखा गाता हूँ।
श्री अनन्तजित् जिनवर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥

जेठ मास की बारस थी, कृष्ण पक्ष जिन पा लसती।
श्री अनन्तजित् नाम हुआ, मन्दर गिरि अभिषेक हुआ॥
जन्म तिथी पर दीक्षा ले, स्वयं आत्म हित शिक्षा ले।
निज आतम में रमण किए, ज्ञायक - ज्ञायक भाव लिए॥
जन्म और दीक्षा कल्याणक, देव सभी मिल आते हैं।
श्री जिनवर के मीत बने हैं, सब मिल अर्घ चढ़ाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - कृष्ण - द्वादश्यां जन्मकल्याणक - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअनंतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमा च चैत्रस्य यदा समागता
तदा हि कैवल्यसुबोधमाप्तवान्।
जयार्यनाम्नो गणदेवतः सभा
सुशोभते श्रीजिनदेवयोगतः॥५७॥

चौबीसों के श्री चरणों में, भ्रमर सरीखा गाता हूँ।
श्री अनन्तजित् जिनवर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
चैत्र अमावस जब आयी, केवल ज्ञान स्वयं लायी।
प्रभु तो अब सर्वज्ञ हुए, वाणी सुन सब विज्ञ भए॥
श्री जयार्य गणधर देवा, करते सुर नर पद सेवा।
गणधर से प्रभु पूजित हैं, देवबन्ध करते हित हैं॥
केवलज्ञानी आत्मधनी की, लक्ष्मी मन को भाती है।
जिनवर के चरणों में अर्पित, यह छोटी सी पाती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - कृष्णामावस्यायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्री - अनंतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स केवली केवलबोधकालतः
समाप मोक्षं सुविशुद्धयोगतः।
अनन्तकालावधिसौख्यसंश्रितः
सुसिद्धचैतन्यनिजात्मनि स्थितः॥५८॥

चौबीसों के श्री चरणों में, भ्रमर सरीखा गाता हूँ।
श्री अनन्तजित् जिनवर के पन, कल्याणक मन लाता हूँ॥
केवलज्ञान तिथी में ही, हो विशुद्ध ध्यानों में ही।
श्री सम्मेद शिखर जाके, मोक्ष पधारे सुख पाके॥
निज चैतन्य गुणाश्रय से, काल अनन्त सुखाशय से।
आप रहेंगे वहीं सदा, भय बाधा ना होय कदा॥
ऐसे सिद्ध प्रभू श्री जिन के, चरणन को चित लाता हूँ।
श्री अनन्त के नन्त चतुष्टय, भक्ति से मैं पाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - कृष्णामावस्यायां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअनंतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन बनता शून्य में,जीव गर्भ में शून्य।
मरण बाद भी छोड़ तन, जीव करे गति शून्य॥२०॥

जोड़ घटाओ शून्य में,रहे एक सा मान।
गुणा करो जिस मान का शून्य गुणन फल जान॥२१॥

१८ - धर्मनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा भानु

माता नाम: रानी सुप्रभा

जन्म स्थान: रत्नपुरी

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर (सुदत्त्वर कूट)

चिन्ह: वज्रदण्ड

वर्ण: स्वर्ण

कैवल्यवृक्ष: सप्तछद(सप्तपर्ण)

प्रथम गणधर: अरिष्ट/अरिष्टसेन

कल्याणक तिथि

गर्भ: वैशाख कृष्ण त्रयोदशी

जन्म: माघ शुक्ल त्रयोदशी

तप: माघ शुक्ल त्रयोदशी

केवलज्ञान: पौष शुक्ल पूर्णिमा

मोक्ष: ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी

१८ – धर्मनाथ – स्तुतिः

(छन्द – रथोध्दता)

अंगरत्नपुरि भानुराजतः
सुप्रभाख्यजननी – शुभोदरे।
यस्त्रयोदशदिने सितागते
राधमासि समवतरज्जिनः ॥८९॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा रमता हूँ।
धर्मनाथ के पन कल्याणक, मन वचन तन से कहता हूँ॥
अंगदेश में रत्नपुरी, राजा भानु धर्मधुरी।
रानी नाम सुप्रभा था, घर – घर में मंगल भाता॥
वैशाखी तेरस उजली, तज देवन घर आत्म चली।
गर्भवास सुख का वासा, दुख जिन को ना कुछ खासा॥
वैमानिक आदिक देवों से, कल्याणक जब होता है।
मात पिता को हर्ष भावमय, मंगलमय सुख होता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख – कृष्ण – त्रयोदश्यां गर्भ – कल्याणक – प्राप्ताय श्रीधर्मनाथ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सत्त्रयोदशदिने सिते शुभे
माघमासि जननं गतो वृषः।
तत्तिथौ जगति तेन दीक्षितो
धर्ममूर्तिरिव भासते स्म सः ॥९०॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा रमता हूँ।
धर्मनाथ के पन कल्याणक, मन वच तन से कहता हूँ॥

माघ शुक्ल तेरस आयी, तीन लोक खुशियाँ छायीं।
धर्मनाथ प्रभु जन्म हुआ, नव प्रभात का उदय हुआ॥
जन्मतिथी दीक्षा तिथि थी, नग्न दिगम्बर मुद्रा थी।
हो निसंग भीतर बाहर, मौन सुखों के हो आगर॥
जन्म और तप कल्याणक की महिमा अवसर आता है।
सुर नर सब मिलकर भावों से, गाय - गाय हर्षाता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं माघ - शुक्ल - त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक - तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीधर्मनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौषमासतिथि - पूर्णिमाऽगता
प्राप केवलनिधिं सुपूजितः।
शिष्यतश्च तदरिष्टसेनतः
सा सभा विशुशुभे विशेषतः॥६१॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा रमता हूँ।
धर्मनाथ के पन कल्याणक, मन वच तन से कहता हूँ॥
पौषमास की पूनम को, केवलज्ञान हुआ जिन को।
सुर गणधर से पूजित आप, श्री अरिहन्त बने निष्पाप॥
थे अरिष्ट सेनाख्य गणी, चार ज्ञान अठ ऋद्धि धनी।
दिव्य ध्वनी हृदयस्थ किए, भव्य जनों को बोध दिए॥
पंचम ज्ञान महान जानकर, भक्ति प्रसून चढ़ाता हूँ।
मानो समवसरण में ही मैं, श्री जिनवर को ध्याता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - शुक्ल - पूर्णिमायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीधर्मनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठशुक्लदिवसे चतुर्थके
शुद्धिमष्टम - महीमुपागतः।
मादृशोऽल्पमतिशक्तिबालकस्
भक्तितस्तव समं भवेल्लघु॥६२॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा रमता हूँ।
धर्मनाथ के पन कल्याणक, मन वच तन से कहता हूँ॥
जेठ शुक्ल का चौथा दिन, आयु पूर्ण होने का दिन।
योगरोध तन पूर्ण तजा, बिन तन मन सुख नन्त भजा॥
श्री सम्मेद शिखर आए, अष्टम सिद्ध भूमि पाए।
अल्प शक्ति औ मतिवाले, मुझ शिशु को जिन नित पालें॥
तव भक्ति से शीघ्र आप सम, सिद्ध शुद्ध बन जाऊँगा।
अतः परम निर्वाण गान कर, शीघ्र आपको पाऊँगा॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - शुक्ल - चतुर्थ्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीधर्मनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भाग देय यदि शून्य में, संख्या बने अनन्त।,
यही शून्य की शक्ति है, करे भाग फल नंत॥२२॥

१६ - शान्तिनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा विश्वसेन

माता नामः रानी ऐरा

जन्म स्थानः हस्तिनापुर

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (कूदप्रभु कूट)

चिन्हः हिरण

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः नन्दी

प्रथम गणधरः चक्रायु

कल्याणक तिथि

गर्भः भाद्र कृष्ण सप्तमी

जन्मः ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी

तपः ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी

केवलज्ञानः पौष शुक्ल दशमी

मोक्षः ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दशी

१६ - शान्तिनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

स हस्तिनापुरस्थ - विश्वसेननामराजतः
सुतोऽभवच्च्युतोऽहमिन्द्रदेव - भोगरागतः।
नभस्यकृष्णसप्तमीदिनेऽवतीर्णतां गतः
सुराङ्गनाविशोधितेऽतिशुद्धगर्भके स्थितः॥६३॥

चौबीसों तीर्थंकर के मैं, सुर प्रणम्य पद ध्याऊँगा।
शान्ति जिनेश्वर त्रय पद धारी, के कल्याणक गाऊँगा॥
नगर हस्तिनापुरी विशेष, राजा विश्वसेन सर्वेश।
जो अहमिन्द्र देव सो आय, रानी ऐरा गर्भ समाय॥
भाद्रमास जो है अतिभद्र, कृष्ण सप्तमी जन्मे भद्र।
सुर सेवित माँ गर्भ विशुद्ध, मोती सीप मांहि ज्यों रुद्ध॥
पन्द्रह मास रत्न वर्षाकर, गर्भ महोत्सव होता है।
जो उत्सव में हर्षित होवे, मुक्ति बीज वह बोता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं भाद्रकृष्ण - सप्तम्यां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचौ च कृष्णपक्षके चतुर्दशी - दिनागतेऽ
प्यसूत नन्दनं निशात्यये हि याम्ययोगके।
क्वचिच्च शंख - सिंहशब्द - कैर्नभश्च पूरितं
चतुर्णिकायदेवसम्मदेन भूतलं भृतम्॥६४॥

चौबीसों तीर्थंकर के मैं, सुर प्रणम्य पद ध्याऊँगा।
शान्ति जिनेश्वर त्रय पद धारी, के कल्याणक गाऊँगा॥
जेठ मास काली चौदस, स्वर्ण कान्ति से दमके अर्श।
याम्य योग में जन्म लिया, स्वयं शंख सिंहनाद किया॥

देव लोक में गूंजे शोर, सुरसमूह का ओर न छोर।
भरा भरा आकाश दिखा, जन्मोत्सव का हर्ष लखा॥
आओ आज मनायें हम सब, जनम समय का कल्याणक।
नाचो गाओ झूमो देखो, पलना में झूले बालक॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - कृष्ण - चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि र्बभूव जन्मकालसंगता तदा जिनो
वनं समाप्य संस्थितः शिलातले मनोहरे।
कुबेरदिङ्मुखः स पञ्चमुष्टि - केशलुञ्चकः
सहस्त्रभूनृपैः समं हि जातरूपधारकः॥६५॥

चौबीसों तीर्थंकर के मैं, सुर प्रणम्य पद ध्याऊँगा।
शान्ति जिनेश्वर त्रय पद धारी, के कल्याणक गाऊँगा॥
जनम काल की तिथि में ही, शान्तिनाथ जी दीक्षा ली।
वन में शिलामनोहर थी, उत्तरमुख प्रभु दृष्टि थी॥
पंचमुष्टि कच लोंच किए, पंचम सागर क्षेप दिए।
साथ सहस्त्रों राजा संग, बने दिगम्बर पूरण अंग॥
तप कल्याणक की वेला में, संयम भाव जगाता हूँ।
शान्तिनाथ पंचम चक्रेश्वर, हृदय वेदि पर ध्याता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - कृष्ण - चतुर्दश्यां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीयशुक्लयोगचक्रसंबलेन संहते
विघातिकर्मचक्रके सुलब्धबोधसौख्यकः।
नभाङ्गणे नरामरैः सुसंभृता वरा सभा
गणाधिपैश्चतुर्विधैश्च संघकैर्विशोभिता॥६६॥

चौबीसों तीर्थंकर के मैं, सुर प्रणम्य पद ध्याऊँगा।
शान्ति जिनेश्वर त्रय पद धारी, के कल्याणक गाऊँगा॥
शुक्लध्यान दूजा ध्याया, घाति कर्म तब नश पाया।
ज्ञान सौख्य बल नन्ता था, महिमा का ना अन्ता था॥
महा गगन में सभा लगी, नरसुर खेचर भीड़ लगी।
संघ चतुर्विध भी शोभे, गणधर जी की जय होवे॥
ज्ञान महा कल्याणक की मैं, पूज रचाने आया हूँ।
स्वर्णकान्ति तन शान्तिनाथ के, चरणन अर्घ चढ़ाया हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - शुक्ल - दशम्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनश्च जन्मकालपक्षमागते स निष्क्रियो
निरुद्धवाग्मनः - शरीरयौगिकः समाधितः।
प्रसिद्धसिद्धभूतले रराज शुद्धचेतनो
जिनेश्वरः सुशान्तिदो हि शान्तिरस्तु मे सदा॥६७॥

चौबीसों तीर्थंकर के मैं, सुर प्रणम्य पद ध्याऊँगा।
शान्ति जिनेश्वर त्रय पद धारी, के कल्याणक गाऊँगा॥
जनम काल वो ही था पक्ष, क्रियारहित जिनवर निष्पक्ष।
पूर्ण समाधि धार लिए, सिद्ध भूमि की ओर गए॥
चेतन शुद्ध शान्ति आलय, जन्म मरण का हुआ विलय।
सदा शान्ति बरसाते जो, शान्ति सुधा दे दें हमको॥
शान्तिनाथ के मोक्ष समय पर, मिलकर हर्ष मनाते हैं।
जो पद पाए श्री जिनवर जी, उस पर हम ललचाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्येष्ठ - कृष्ण - चतुर्दश्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीशांतिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१७ - कुन्थुनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा सूरसेन

माता नामः रानी श्रीकान्ता

जन्म स्थानः हस्तिनापुर

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (ज्ञानधर कूट)

चिन्हः बकरा

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः तिलक

प्रथम गणधरः स्वयंभू

कल्याणक तिथि

गर्भः श्रावण कृष्ण दशमी

जन्मः वैशाख शुक्ल प्रथमा

तपः वैशाख शुक्ल प्रथमा

केवलज्ञानः चैत्र शुक्ल तृतीया

मोक्षः वैशाख शुक्ल प्रथमा

१७ - कुन्थुनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

प्रकोटि - कोटिभूरिरत्नवर्षणं नृपांगणे
समं हि कल्पवृक्षपुष्पगन्धहेमवृष्टिभिः।
स हस्तिनापुराधिपस्य सूरसेनभूपतेः
सुरूपशीलवल्लभोदरे जिनः समागतः॥६८॥

चौबीसों तीर्थंकर मेरे, जिनशासन उन्नायक हैं।
कुन्थुनाथ जी त्रय पदधारी, धर्म दया मय धारक हैं॥
हस्तिनागपुर अधिपति हैं, सूरसेन की श्रीमती हैं।
कुरुवंशी राजांगण में, ढेर स्वर्ण रत्न चमकें॥
अन्तिम रात्रि गर्भ हुआ, देव स्वर्ग चय मुदित हुआ।
श्रावण कृष्णा दशमी थी, मात स्वप्न लख हर्षी थी॥
कुन्थुनाथ जिनवर का देखो, गर्भकाल कल्याणक है।
चारों विधसुरगण भी सारे, मात पिता परिचारक हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - कृष्ण - दशम्यां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स जन्मतो हि निर्मलः सुलक्षणो विलक्षणो
हितं मितं वचश्च यस्य गौरदुग्धरक्तवान्।
दशातिशायिलक्षणै - रिदं जगत् सुविस्मितं
गजेन्द्ररुढबालकः सुमेरुशैल - शोभितः॥६९॥

चौबीसों तीर्थंकर मेरे, जिनशासन उन्नायक हैं।
कुन्थुनाथ जी त्रय पदधारी, धर्म दया मय धारक हैं॥

शिशु दश अतिशय घारी है, वरलक्षण हितकारी है।
निर्मल तनु हितमित वचना, दुग्ध रक्त से देह सना॥
ऐरावत गज पर आरूढ, मेरु शिखर पहुँचे जो रूढ।
नाम कुंथु सुर ने रक्खा, नव प्रसूत अभिषेक रचा॥
जन्म समय की मंगल बेला, तीन लोक मंगल करती।
कल्याणक सुरकृत उत्सव से, सबको ही पावन करती॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - शुक्ल - प्रतिपदायां जन्म - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनित्यभावनादिभावनेन यो विरागतां
गतो वनं गतः परिग्रहं द्वयं विहाय वै।
शमादिशैत्यसीकरैः कषायवह्नितापकं
जिनेन कुन्थुतीर्थनायकेन भूरि संहृतम्॥७०॥

चौबीसों तीर्थंकर मेरे, जिनशासन उन्नायक हैं।
कुन्थुनाथ जी त्रय पदधारी, धर्म दया मय धारक हैं॥
प्रभु बारह भावन भायी, निज हित की जब सुधि आयी।
बाहर भीतर संग तजा, वीतराग का रंग भजा॥
शमशीतल हिमभावों से, शान्त किया मन तापों से।
कुंथु जीव सब दया धरी, शान्त कषायें सभी कटी॥
तप से ही जीवन उन्नत हो, प्रभु संदेश सुनाते हैं।
मौनधार कर विहरत रहते, भक्त चकित रह जाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - शुक्ल - प्रतिपदायां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अवाप्य चेतनोत्थवीर्यबोधदृष्टिसौख्यकं
चराचरं जगच्च तेन वीक्षितं निजात्मना।
स भावनादिकल्पवासिसर्वदेवपूज्यता -
पदं समाप नैकदेशकं विहृत्य केवली॥७१॥

चौबीसों तीर्थंकर मेरे, जिनशासन उन्नायक हैं।
कुन्थुनाथ जी त्रय पदधारी, धर्म दया मय धारक हैं॥
चेतन की शक्ति प्रगटी, फौज कर्म की लुटी पिटी।
सुख दर्शन पूरण पाया, जगत चराचर लख गाया॥
सुर नर गणधर सेवित थे, नर नारी सब मोहित थे।
देश अनेक विहार किए, दे उपदेश सुधार किए॥
ज्योति र्व्यन्तर भवन सुरों से, कल्पवासि से सेवित हैं।
कामदेव चक्री तीर्थंकर के, चरणन में हम अर्पित हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - तृतीयायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजायुषः समन्तिके स्वयं विहाय वैभवं
सभाविमध्यदेशनाक्रमं विहारसंभवम्।
अनादिकालबद्धयोगशक्तिरोधनेन स
क्षणेन मुक्तिसुश्रियं व्यशिश्रियज्जिनेश्वरः॥७२॥

चौबीसों तीर्थंकर मेरे, जिनशासन उन्नायक हैं।
कुन्थुनाथ जी त्रय पदधारी, धर्म दया मय धारक हैं॥
आयु अंत को जब जाना, मौन लिया रोका जाना।
बद्ध योग शक्ति रोकी, पूर्ण समाधि तब होती॥

श्री सम्मेद शिखर जाके, शुक्ल ध्यान आश्रय पाके।
ठाड़े - ठाड़े मोक्ष गये, शुद्ध आत्म अति सूक्ष्म भए॥
अष्ट गुणों से शुद्ध बने जो, उनकी पूज रचाता हूँ।
अष्टम वसुधा को पाने को मैं, सम्मेदाचल जाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - शुक्ल - प्रतिपदायां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीकुन्थुनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाहर से सब ही भरे, पर भीतर से शून्य,।
आत्म बोध निज बोध बिन,अन्तस सबका शून्य॥२३॥

ज्ञान ध्यान जप त्याग से,भरा हुआ वह बुद्ध।
भीतर कुछ संसार ना, अतः शून्य प्रतिबुद्ध॥२४॥

भीतर ना संसार तो, वसुधा बने कुटुम्ब।
अर्हं श्री की भावना गह अक्षय पद थम्ब॥२५॥

१८ - अरनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा सुदर्शन

माता नामः रानी मित्रसेना

जन्म स्थानः हस्तिनापुर

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (नाटक कूट)

चिन्हः मछली

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः आम्र

प्रथम गणधरः कुम्भ

कल्याणक तिथि

गर्भः फाल्गुन शुक्ल तृतीया

जन्मः मार्गशीर्ष शुक्ल चतुर्दशी

तपः मार्गशीर्ष शुक्ल दशमी

केवलज्ञानः कार्तिक शुक्ल द्वादशी

मोक्षः चैत्र कृष्ण अमावस्या

१८ - अरनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

स हस्तिनापुरस्य भूपतिः सुदर्शनो वरः
प्रियोदरे च यस्य फाल्गुनेऽसिते तृतीयके।
जयन्तदेव - सद्विमानतोऽहमिन्द्रतश्च्युतः
समाततार सर्वदेवपूजितो जिनो ह्यरो॥७३॥

चौबीसों जिनवर के चरणां, हृदय कमल में ध्याता हूँ।
श्री अरनाथ यतीश्वर के, अब पन कल्याणक गाता हूँ॥
पूत हस्तिनापुर है धाम, श्रेष्ठ सुदर्शन पितु का नाम।
प्रिया मित्रसेना रानी, स्वप्न कथा नृप से जानी॥।
फागुन कृष्ण तृतीया है, जीव गर्भ में जीया है।
जो जयन्त अहमिन्द्र मुआ, वही तीर्थंकर आज हुआ॥
पन्द्रह मास गर्भकल्याणक, देव मनाने आते हैं।
सुरपूजित उन जिनवर को हम, अर्घ चढ़ा हर्षाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - शुक्ल - तृतीयायां गर्भकल्याणक - प्राप्ताय श्रीअरनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स मार्गशीर्षशुक्लपक्षके चतुर्दशीतिथौ
जिनोऽजनीह सर्वलोकशान्तिकारकःक्षणे।
मरुद्वराः सजानवः समागतास्त्रिविष्टपं
विधाय पूर्णशून्यकं नु वर्णनाय को ह्यलम्॥७४॥

चौबीसों जिनवर के चरणां, हृदय कमल में ध्याता हूँ।
श्री अरनाथ यतीश्वर के अब, पन कल्याणक गाता हूँ॥
मार्गशीर्ष चौदसतिथि थी, शुक्लपक्ष जनमे मिति थी।
सर्वलोक में शान्ति हुई, जिन प्रभाव की क्रान्ति हुई॥

धरती गगन लखो चहुँ ओर, देव देवियां ओर न छोर।
खाली स्वर्ग विमान हुए, जन्मोत्सव के गान हुए॥
सुर कृत कल्याणक की महिमा, कौन सुना पूरण सकता।
इसीलिए असमर्थ हुआ, मैं झुक - झुक चरणों को नमता॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्ल - चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीअरनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स शारदाम्बुदप्रणाशलोकनात् प्रबोधितः
सहेतुकं वनं गतश्चरित्रभारधारकः।
क्षणे सति प्रदीक्षणे चतुर्थबोधदीपितो
निजात्मनि प्रसन्नता प्रमत्ततोऽप्रमत्ततः॥७५॥

चौबीसों जिनवर के चरणां, हृदय कमल में ध्याता हूँ।
श्री अरनाथ यतीश्वर के अब, पन कल्याणक गाता हूँ॥
शरद मेघ का देखा नाश, निज सुधिआई तज भव पाश।
गए सहेतुक वन नृपराज, धार महाव्रत वे मुनिराज॥
दीक्षा क्षण चौथा अवबोध, दृढ़ सातें गुणथानक शोध।
निज आतम में रमना है, मन में निज गुण भरना है॥
मन को शुद्धातम में रमकर, कर्म भार क्षय पाया है।
श्री अरनाथ मुनीश्वर की छवि, हृदय धार सुख पाया है॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्ल - दशम्यां तपःकल्याणक - प्राप्ताय श्रीअरनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बलं विनावलम्बनं बलादितः स केवली
भवान् सुभाग्यवान् भगोऽभवो भवे भवान्तकः।
अरो वरो दिगम्बरो विदाम्वरः स्वयंवरो
विशान्त दान्त मुक्तिकान्त वान्तवैर ते नमः॥७६॥

चौबीसों जिनवर के चरणां, हृदय कमल में ध्याता हूँ।
श्री अरनाथ यतीश्वर के अब, पन कल्याणक गाता हूँ॥
बिन आलम्बन ध्याया है, निज में निज को पाया है।
केवलज्ञान जगा बलवान, अभय रूप भव अन्तक जान॥
श्रमण दिगम्बर अर्हत हैं, शान्त दान्त वर विद्वर हैं।
मुक्ति कान्त हैं वैर नहीं, मेरे भगवन आप सही॥
राग रोष से रहित जिनेश्वर, नमस्कार करता जयकार।
पूजा चौथे कल्याणक की, करने को सब हैं तैयार॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - शुक्ल - द्वादश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीअरनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रसिद्ध सिद्ध शुद्ध बुद्ध रुद्धयुद्ध वृद्ध भोः!
प्रसीद मे प्रसीद मे प्रसीद मे प्रसीद मे।
शिवंकरं सुखंकरं हितंकरं दयाकरं
नमामि तं नमामि तं नमामि तं नमामि तम्॥७७॥

चौबीसों जिनवर के चरणां, हृदय कमल में ध्याता हूँ।
श्री अरनाथ यतीश्वर के अब, पन कल्याणक गाता हूँ॥
शुद्ध बुद्ध सब रोके युद्ध, वृद्ध प्रसिद्ध हमारे सिद्ध।
मुझको आप प्रसन्न करो, और नहीं कुछ काम करो॥
सुखकर हितकर हे जिन आप, दयावान शिव सुख निष्पाप।
नमन आपको करता हूँ, काम न दूजा करता हूँ॥
सिद्धनाथ अरनाथ प्रभू का, आज मनाता कल्याणक।
मोक्ष गमन की इस वेला में, जिनवर ही मेरे पालक॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रकृष्णमावस्यायां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीअरनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

१९ - मल्लिनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा कुम्भ

माता नाम: रानी प्रजावती

जन्म स्थान: मिथिला

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर (संवल कूट)

चिन्ह: कलश

वर्ण: स्वर्ण

कैवल्यवृक्ष: कंकेलि

प्रथम गणधर: विशाख

कल्याणक तिथि

गर्भ: चैत्र शुक्ल प्रथमा

जन्म: मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी

तप: मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी

केवलज्ञान: पौष कृष्ण द्वितीया

मोक्ष: फाल्गुन शुक्ल पंचमी

१९ - मल्लिनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

सुवंगदेशकुम्भभूपतिप्रिया प्रजावती
सुचैत्रमासशुक्लपक्ष - वासराद्यगर्भिता।
सुरेन्द्रसन्निदेशतः सुराङ्गनासुसेविता
दिनं दिनं गृहांगणे सुरत्नपंक्तिवर्षणं॥७८॥

चौबीसों तीर्थंकर जिन को, हाथ जोड़ सिर नाता हूँ।
मल्लिनाथ जिनराज महा हैं, पन कल्याणक गाता हूँ॥
वंग देश के राजा कुंभ, रानी प्रजावती थी शुद्ध।
चैतमास का पहला दिन, शुक्ल पक्ष में आए जिन॥
घर आंगन सोना वर्षा, लेकर चित्त प्रजा हर्षा।
माँ की देवी में संलग्न, सुरआज्ञा से सुख में मग्न॥
मल्लिनाथ के गर्भ समय के, कल्याणक को ध्याता हूँ।
जन्म मरण से रहित जिनेश्वर, चरणन अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - शुक्ल - प्रतिपदायां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमार्गशीर्षशुक्लपक्षवासरे दशैकके
व्यसूत बालकं जिनं हि मल्लिनामविश्रुतम्।
सुमेरुपर्वतेऽपि पञ्चमाब्धिनीरसेचनं
समुत्सवं व्यधाच्च जन्मनोऽमरेन्द्र इत्यतः॥७९॥

चौबीसों तीर्थंकर जिन को, हाथ जोड़ सिर नाता हूँ।
मल्लिनाथ जिनराज महा हैं, पन कल्याणक गाता हूँ॥
मार्गशीर्ष शुक्ला ग्यारस, मल्लि नाम विख्यात सुरस।
जिन बालक उत्पन्न हुआ, सुर गिरि पर अभिषेक हुआ॥

क्षीर जलधि का जल आया, सुर कतार सागर पाया।
सज्जा उत्सव गान किया, फिर पितु गृह भी नृत्य हुआ॥
मल्लिनाथ का मंगलकारी, जन्म दिवस अघ हरता है।
देव देवियों के उत्सव से, जन - जन अचरज करता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्लैकादश्यां जन्म - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समानधर्मधृच्च वस्तु सर्वथा न सांख्यवत्
विशेषधर्मधृच्च वस्तु सर्वथा न बौद्धवत्।
अपेक्षकं विना न धर्मयोस्तु वस्तु यौगवत्
मते त्वयात्मधर्मयोः कृते जिने सुदीक्षितः॥८०॥

चौबीसों तीर्थंकर जिन को, हाथ जोड़ सिर नाता हूँ।
मल्लिनाथ जिनराज महा हैं, पन कल्याणक गाता हूँ॥
सांख्य मान्य ना वस्तु रही, बौद्ध मान्य भी वस्तु नहीं।
मात्र समान विशेष नहीं, दोनों भी निरपेक्ष नहीं॥।
सापेक्षिक सामान्य विशेष, जिन मत कहता धर्म अशेष।
द्वयविध आत्म धर्म पाने, दीक्षा ली आतम ध्याने॥
मल्लिनाथ निर्ग्रन्थ दिगम्बर, मुनिवर दीक्षा कल्याणक।
जो पूजे उसको मिलता है, रत्नत्रय शिव का साधक॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्लैकादश्यां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विधाय साम्यवृत्तिकं चिदात्मकेलिचिन्तनं
बलिष्ठकर्ममल्लयुद्धमात्मने कृतं त्वया।
तदैव पञ्चमं प्रबोधदर्शनं समुद्गतं
समस्तदेवपूजितः सुशोभितः सभांगणे॥८१॥

चौबीसों तीर्थंकर जिन को, हाथ जोड़ सिर नाता हूँ।
मल्लिनाथ जिनराज महा हैं, पन कल्याणक गाता हूँ॥
चिति क्रीड़ा चिंतन पाया, साम्य वृत्ति असि कर लाया।
कर्म बली से मल्ल हुआ, दूर कर्म का दखल हुआ॥
ज्ञान पाँचवाँ प्राप्त किया, दर्शन ज्ञान अपार लिया।
सभा नभांगण में शोभे, सुर महिमा अद्भुत होवे॥
महा ज्ञान कल्याणक का मैं, पूजन आज रचाता हूँ।
इस मंगल अवसर पर जिन की, गुण पर्यायें ध्याता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष - कृष्ण - द्वितीयायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रमाणसिद्धचेतनादि - सप्ततत्त्वभासुरं
जगत्त्रयं समाभृतं चराचरैः पदार्थकैः।
निजात्मसिद्धिसाधनैर्निजे रुचिर्निजे रतिस्
ततो बभूव सिद्धलोकशुद्धचिन्मयो भवान्॥८२॥

चौबीसों तीर्थंकर जिन को, हाथ जोड़ सिर नाता हूँ।
मल्लिनाथ जिनराज महा हैं, पन कल्याणक गाता हूँ॥
लोक चराचर अर्थ भरा, सात तत्त्व चैतन्य खरा।
निज में रुचि निज में रति से, निज आतम की सिद्धि से॥
सिद्ध लोक पर वास किया, शुद्ध चिदातम मग्न जिया।
काल अनन्ता ज्यों के त्यों, शुद्ध स्वर्ण भासुरता ज्यों॥
मोक्ष महा कल्याणक बेला, भव्य जनों मन भाती है।
काल अनादी बीता नन्ता, एक वार यह आती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुनशुक्लपंचम्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमल्लिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२० - मुनिसुव्रतनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा सुमित्र

माता नामः रानी सोमा

जन्म स्थानः राजगृही

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (निरजर कूट)

चिन्हः कछुआ

वर्णः नीला/काला

कैवल्यवृक्षः चम्पक

प्रथम गणधरः मल्लि

कल्याणक तिथि

गर्भः श्रावण कृष्ण द्वितीया

जन्मः वैशाख कृष्ण द्वादशी

तपः वैशाख कृष्ण दशमी

केवलज्ञानः वैशाख कृष्ण नवमी

मोक्षः फाल्गुन कृष्ण द्वादशी

२० - मुनिसुव्रतनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

सुमित्रभूपतेः प्रिया तदा हि गर्भिणी मता
यदा महागजो तया मुखं प्रविष्ट ईक्षितः।
क्रियासु मंगलोत्सवे जिनस्य संनियोजिताः
कुलाचलाऽमरस्त्रियोऽमरैः सुभक्तिनिर्भरैः ॥८३॥

चौबीसों तीर्थंकर की थुति, करने का मन लाता हूँ।
मुनिसुव्रत जिनराज पदों को, हृदय धार सुख पाता हूँ॥
राजगृही नगरी राजा, थे सुमित्र के हितकाजा।
रानी सोमा गर्भवती, गज मुख में लख चकितवती॥
मंगल उत्सव करने गान, कुलाचली सुरियों की शान।
माँ सेवा में युक्त हुई, माँ भी दुःख से मुक्ति भई॥
गर्भ महाकल्याणक सुर से, प्रमुख इन्द्र से होता है।
देव करें जब सेवा जिन की, मानुष फिर क्यों सोता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - कृष्ण - द्वितीयायां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मयूरकण्ठसन्निभं शरीरमस्य जन्मतो
विभासुरं दिवाकरक्षपाकरप्रभाधिकम्।
सुरेन्द्रदत्तमम्बरं सुखासनं विभूषणं
विमानदेवसंगतं समन्तकेलिजीवितम् ॥८४॥

चौबीसों तीर्थंकर की थुति, करने का मन लाता हूँ।
मुनिसुव्रत जिनराज पदों को, हृदय धार सुख पाता हूँ॥
मोर कण्ठ सी तन आभा, सूर्य चन्द्र की फीकी भा।
जन्म काल अद्भुत शोभा, इन्द्रशची सब चकित सभा॥

वस्त्र शयन आसन भूषण, देव प्रदत्त भोगतन मन।
वैमानिक देवों के संग, जिनवर की क्रीड़ा का रंग॥
जन्म महोत्सव कल्याणक से, तीन लोक हिल जाता है।
मन्दर पर अभिषेक मांडकर, ताण्डव नृत्य सुहाता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - कृष्ण - द्वादश्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स यागहस्तिना गृहीतसंयमं विलोक्य वै
निजात्मबोधबोधितो विरागभावजाग्रतः।
वनं च नीलनामकं गतः सहस्त्रसन्नृपैः
समं समासमे शमं शशाम साम्यसंयमे॥८५॥

चौबीसों तीर्थंकर की थुति, करने का मन लाता हूँ।
मुनिसुव्रत जिनराज पदों को, हृदय धार सुख पाता हूँ॥
याग हस्ति संयम धारे, लख जिनवर मन समझा रे।
भव तन भोग विभंगुर हैं, आत्मबोध सुख अंदर है॥
राज हजारों साथ लिए, नील नाम वन आप गए।
विषम भाव सम शमन किए, संयम साम्य स्वभाव लिए॥
दीक्षा कल्याणक की वेला, लौकान्तिक भी आते हैं।
जिनवर की वैराग्य कथा की, चर्चा से हर्षाते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - कृष्ण - दशम्यां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मुनौ मुनिश्च सुव्रतो महाव्रतेषु संचरन्
ननङ्गरागरङ्गसङ्गमन्तरङ्ग - भङ्गिनम्।
विभज्य मुक्तिकामिनीविवाहने सुसज्जितस्
तदा हि पञ्चमप्रमाणबोधनेत्रमुद्गतम्॥८६॥

चौबीसों तीर्थंकर की थुति, करने का मन लाता हूँ।
मुनिसुव्रत जिनराज पदों को, हृदय धार सुख पाता हूँ॥
महाव्रतों का संयम था, जिससे फिर डरता यम था।
काम राग सब भंग किए, मुक्ति वधू के संग जिए॥
ज्ञान पाँचवां तब प्रगटा, घोर तिमिर अज्ञान हटा।
सभा सुशोभित सुर नर से, गणधर से अठ प्रतिहर से॥
केवलज्ञान महाकल्याणक, देव समूह मनाता है।
जिनवर रूप स्वरूप देखकर, जन - जन मन हर्षाता हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - कृष्ण - नवम्यां ज्ञान - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अशेषदेशसंस्थितं च सर्वगं मनन्ति ये
वटस्य बीजवच्च भूतजं क्वचिन्मनन्ति ये।
न तेषु चित्प्रसिद्ध्यतेप्यमूर्तता न विद्यते
ततोप्यमूर्तचेतना त्वया मुनीश! शुध्यते॥८७॥

चौबीसों तीर्थंकर की थुति, करने का मन लाता हूँ।
मुनिसुव्रत जिनराज पदों को, हृदय धार सुख पाता हूँ॥
सकलदेश व्यापी सर्वज्ञ, वट बीजन सम मानें अज्ञ।
कोई भूतज माने जीव, नहीं अमूरत होय सदीव॥
हे मुनीश! तव मत में आन, मूर्त अमूरत दोनों वान।
शुद्ध चेतना आप हुई, जो अनादि अपवित्र रही॥
शुद्ध अमूरत चेतन का धन, मोक्ष महाकल्याणक है।
जिनवर की पूजा का फल ही, स्वर्ग मुक्ति सुख दायक है॥

ॐ ह्रीं अर्हं फाल्गुन - कृष्ण - द्वादश्यां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीमुनिसुव्रतनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२१ - नमिनाथ - स्तुतिः

पिता नाम: राजा विजय

माता नाम: रानी वर्मिला

जन्म स्थान: मिथिला

निर्वाण स्थान: सम्मेद शिखर (मित्रधर कूट)

चिन्ह: नीलकमल

वर्ण: स्वर्ण

कैवल्यवृक्ष: बकुल

प्रथम गणधर: सुप्रभ

कल्याणक तिथि

गर्भ: आश्विन कृष्ण द्वितीया

जन्म: आषाढ़ कृष्ण दशमी

तप: आषाढ़ कृष्ण दशमी

केवलज्ञान: मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी

मोक्ष: वैशाख कृष्ण चतुर्दशी

२१ - नमिनाथ - स्तुतिः

(छन्द - पंचचामर)

सुगर्भकाल आगतस्ततो हि पूर्वतः सुरैः
सुवर्णरत्नवर्षणं व्यधायि सर्वभूतिदम्।
हि वर्मिला कुलीनशीलरूपवर्णसत्खनिः
कृती स तत्र गर्भकेऽहमिन्द्रतश्च्युतो गतः॥८८॥

चौबीसों जिनदेव प्रभु की, भक्ति का मन लाता हूँ।
तीर्थंकर श्री नमिनाथ के, पन कल्याणक गाता हूँ॥
गर्भ काल के पहिले ही, स्वर्णरत्न वर्षा की थी।
जन - जन को वैभव भाया, मात वर्मिला उर जाया॥
शील कुलीन रूप की खान, जिनके उर आए सप्राण।
कृती जीव अहमिन्द्रों से, सेवित हैं नर इन्द्रों से॥
कल्याणक जो गर्भ समय का, उसका पूजन करता हूँ।
जन - जन कल्याणकदायी उन, पुण्य भाव को लखता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आश्विन - कृष्ण - द्वितीयायां गर्भ - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीनमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवप्रसूतबालको गजेन्द्रशुण्डधारया
मुखेन योजनैकविस्तरेण कुंभकेन यः।
जिनोऽभिषिक्त इत्यतो नमिः सुरेन्द्रघोषितः
शचीकृताभिमण्डितोऽनु ताण्डवेन दर्शितः॥८९॥

चौबीसों जिनदेव प्रभु की, भक्ति का मन आता है।
तीर्थंकर श्री नमिनाथ के, पन कल्याणक गाता हूँ॥
कुंभ एक योजन वाले, नव प्रसून शिशु पर डाले।
जिन बालक अभिषिक्त हुए, गजधारा पे अडिग हुए॥

नमिजिन नाम सुरेन्द्र रखा, सहस नेत्र से इन्द्र लखा।
शची करे शिशु की सज्जा, ताण्डव नृत्य लखे बच्चा॥
जन्म महोत्सव मंगलदायी, मन आनन्द बढ़ाता है।
जिनवर की पूजा का अवसर, भव्य हृदय मन भाता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ - कृष्ण - दशम्यां जन्म - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीनमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विराग - शंसनाय पञ्चमाच्च कल्पतः सुराः
समागताः प्रबोध्य ते गताः पुनर्निजालयम्।
यथार्थवृत्तमात्मनो निजात्मना स भावयन्
न किञ्चनोऽस्मि मे परो न कश्चिदस्ति चेष्टते॥९०॥

चौबीसों जिनदेव प्रभु की, भक्ति का मन आता है।
तीर्थंकर श्री नमिनाथ के, पन कल्याणक गाता है॥
फिर दीक्षा अवसर आया, ब्रह्म कल्प सब सुर आया।
कर वैराग्य प्रशंसा वो, चले गए निज आलय को॥
मैं कुछ ना मेरा कुछ ना, भाव अकिंचित्कर मन ला।
आत्म चरित में रमण किए, भव भ्रमणा से रहित हुए॥
दीक्षा कल्याणक की पूजा, भाव भक्ति से करता हूँ।
मोक्ष मार्ग की चरित निधी को, पा जाऊँ मन भरता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ - कृष्ण - दशम्यां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीनमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दयालुताऽसुभृत्सु निःस्पृहालुता तनौ सदा
यशोऽनुकीर्तये न लाभपूजनाय सत्तपः।
तपः फलेन विश्वचक्षुषा त्वयावलोकितं
सयोगिकेवलिन्! जगत्त्रयं नमीश! हेलया॥९१॥

चौबीसों जिनदेव प्रभु की, भक्ति का मन लाता हूँ।
तीर्थंकर श्री नमिनाथ के, पन कल्याणक गाता हूँ॥
प्राणि दया मन में धारे, निस्पृह हो तन मति मारे।
यश पूजा बिन तप करते, तप फल से सब विधि झरते॥
विश्व लखे केवलज्ञानी, विश्व चक्षु आतम ध्यानी।
आप सयोगी जिन अरिहंत, तीन जगत देखें बिन अन्त॥
ज्ञान महा कल्याणक की मैं, मंगल पूजन करता हूँ।
मेरा आतम ज्ञान धनी हो, यही भाव मन करता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - शुक्लैएकादश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीनमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स शाश्वतं पदं निजं स्वतन्त्रतास्पदं प्रियं
निराकुलं निरामयं निरस्तकर्मजालकम्।
समाप्य शुद्धचेतनोत्थसौख्यमक्षयात्मकं
समन्वभूदलोकलोक - लोकितैकलोचनम्॥९२॥

चौबीसों जिनदेव प्रभु की, भक्ति का मन लाता हूँ।
तीर्थंकर श्री नमिनाथ के, पन कल्याणक गाता हूँ॥
आप निराकुल सुख पाये, प्रिय स्वतन्त्र निज पद पाये॥
लोक अलोक प्रकाशित हैं, चेतन शुद्ध अबाधित है॥।
आप स्वात्म सुख में तल्लीन, सदा निरामय कर्म विहीन।
मोक्षमार्ग फल पाये आप, काल अनन्त मुक्ति निष्पाप॥
महा - महा निर्वाण महोत्सव, आज हृदय से ध्याता हूँ।
देवेन्द्रों से जिनकी पूजा, उनकी पूजा गाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - कृष्ण - चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक - प्राप्ताय श्रीनमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२२ - नेमिनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा समुद्रविजय

माता नामः रानी शिवदेवी

जन्म स्थानः शौरीपुर

निर्वाण स्थानः ऊर्जयन्त पर्वत (गिरनार)

चिन्हः शंख

वर्णः काला/नीला

कैवल्यवृक्षः महावेणु(बाँस)

प्रथम गणधरः वरदत्त

कल्याणक तिथि

गर्भः कार्तिक शुक्ल षष्ठी

जन्मः श्रावण शुक्ल षष्ठी

तपः श्रावण शुक्ल षष्ठी

केवलज्ञानः आश्विन कृष्ण प्रथमा

मोक्षः आषाढ़ शुक्ल सप्तमी

२२ - नेमिनाथ - स्तुतिः

(छन्द - रुचिरावृत्तम्)

समुद्रपूर्वविजयनामतो नृपो
मनोरमाऽस्य शशिमुखी प्रिया शिवा।
जयन्तस्वर्ग - समुषिताहमिन्द्रतश्
च्युतो जगाम तदुदरे स्ववैभवात्॥९३॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा आता हूँ।
नेमिनाथ जी तीर्थंकर की, कल्याणक थुति गाता हूँ॥
शूरसेन जनपद विख्यात, प्राकृत शौरसेनि की बात।
शौरीपुर के राजा जो, नाम समुद्र विजय से हो॥
तज जयन्त अहमिन्द्र विभव, शिवामात उर लेते भव।
रानी सुन्दर पुत्र मनोज्ञ, ज्यों सीपी में मोती योग॥
नेमिनाथ के गर्भ समय की, बात तुम्हें बतलाता हूँ।
यादववंशी क्षत्रिय स्वामी, मोद हृदय में पाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - शुक्ल - षष्ठ्यां गर्भकल्याणक - प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजायत त्रिविधविबोधभासुरो
मनाग् न तेन तु जननीह पीडिता।
प्रहर्षमाण - सुरसमूहसेवितो
जिनो हि नीलकमलदीप्तिदेहवान्॥९४॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा आता हूँ।
नेमिनाथ जी तीर्थंकर की, कल्याणक थुति गाता हूँ॥
तीन ज्ञान से भासुर थे, वन्दित देव सुरासुर थे।
माँ को पीड़ित नहीं किया, जन्म समय ना रुदन किया॥

नील कमल तन लख करके, देह कान्ति सबसे बढ़के।
विस्मित होते नर सुर राज, दश अतिशय लख दंग समाज॥
जन्म महा कल्याणक का मैं, हर्ष कहाँ कह पाता हूँ।
भाग्यवान ही देखे जाने, सोच - सोच सुख पाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - शुक्ल - षष्ठ्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समीक्ष्य जीवहननबन्धबाधनं
दयामनास्तु निजगृहं पुनर्ययौ।
विरागभावनमगमन् भवस्मृते -
रपद्यताशु सकलसंयमं सुधीः॥९५॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा आता हूँ।
नेमिनाथ जी तीर्थंकर की, कल्याणक थुति गाता हूँ॥
मेरे ब्याह निमित्त अनेक, वध बंधन जीवों का देख।
दयामना वापिस घर आ, राजुल की चिन्ता ना हा॥
पूर्व जन्म स्मृति पाके, भाव विराग तभी जागे।
देव सराहें प्रभु के भाव, संयम सकल धरा अति चाव॥
नेमि निष्क्रमण की वेला में, उदासीन मन धरते हैं।
राग मोह से रहित मना वो, अद्भुत निज रुचि करते हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - शुक्ल - षष्ठ्यां तपः - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विहृत्य रैवतकगिरौ स केवलं
सुलब्धवान् सकलपदार्थविज्ञकः।
विकेवलावगम - महोत्सवार्चितो
गणेशमुख्य - सुवरदत्तनामकः॥९६॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा आता हूँ।
नेमिनाथ जी तीर्थंकर की, कल्याणक थुति गाता हूँ॥
ऊँचा अर्जयन्त गिरि है, नाम रैवतक भूपरि है।
गिरनारी जग में विख्यात, केवलज्ञान जहाँ जिन पात॥
सुरकृत उत्सव अद्भुत है, दिव्य ध्वनि में अमृत है।
श्री वरदत्त महा मुनिराज, गणधर पद पे शोभित आज॥
केवलज्ञान महा कल्याणक, अद्भुत महिमा वाला है।
शब्दों में क्या लिखना संभव, चेतन खेल निराला है॥

ॐ ह्रीं अर्हं आश्विन - कृष्ण - प्रतिपदायां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स ऊर्जयन्तगिरिवरं समाश्रितो
निहत्य शेषविधिमलं समाधितः।
प्रसिद्धसिद्धजगति सौख्यमात्मनः
समन्वभूत् चिति सकलात्मबोधतः॥९७॥

चौबीसों के चरण कमल में, भ्रमर सरीखा आता हूँ।
नेमिनाथ जी तीर्थंकर की, कल्याणक थुति गाता हूँ॥
कर विहार बहु देशों में, भेष दिगम्बर भेषों में।
ऊर्जयन्त गिरि चढ आए, शुक्ल ध्यान चौथा पाए॥
कर्म मैल को हत करके, लोक शिखर बैठे जा के।
ज्ञानसुखों से चित् भरपूर, रोग शोक दुख रहते दूर॥
मोक्ष महा कल्याणक को मैं, भक्ति विवश हो ध्याता हूँ।
शब्द छन्द रचना से ही मैं, प्रभु प्रति प्रेम जगाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ - शुक्ल - सप्तम्यां मोक्षकल्याणक - प्राप्ताय श्रीनेमिनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२३ - पार्श्वनाथ - स्तुतिः

पिता नामः राजा अश्वसेन

माता नामः रानी वामादेवी

जन्म स्थानः कशी बनारस

निर्वाण स्थानः सम्मेद शिखर (स्वर्णभद्र कूट)

चिन्हः सर्प

वर्णः हरा

कैवल्यवृक्षः देवदारु

प्रथम गणधरः स्वयंभू

कल्याणक तिथि

गर्भः वैशाख कृष्ण द्वितीया

जन्मः पौष कृष्ण एकादशी

तपः पौष कृष्ण एकादशी

केवलज्ञानः चैत्र कृष्ण त्रयोदशी

मोक्षः श्रावण शुक्ल सप्तमी

२३ – पार्श्वनाथ – स्तुतिः

(छन्द – पुष्पिताग्रावृत्तम्)

सुरकृत – वसुधारयाऽश्वसेन –
नृपतिगृहे भुवि पूजना व्यधायि।
कुलगिरिसुरदेवतातिसेवा –
वरजननीसुखमेधते स्म नित्यम्॥९८॥

चौबीसों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाता हूँ।
पार्श्वनाथ के पन कल्याणक, हर पल मन मैं ध्याता हूँ॥
नगर बनारस के राजा, अश्वसेन हर्षित परजा।
रत्नधार नित गृह गिरती, सुरकृत पुष्पन की वृष्टि॥
कुलपर्वत की देवी से, सेवित माँ सुख वृद्धि से।
जिन गर्भित हो जाने से, धरती पर सुख छाने से॥
गर्भ महाकल्याणक पूजा, जिनवर अद्भुत दात्री हो।
हम सब मिलकर हर्ष मनायें, शुभ स्वप्नों की रात्री हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख – कृष्ण – द्वितीयायां गर्भकल्याणक – प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ – जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशयपरिपूरितं तु जन्मा –
मरगणसेवितवृद्धिमागतः सः।
वरजलधिजलेन मेरुषिक्तो
द्विचरमतीर्थकरो हि पार्श्वनाथः॥९९॥

चौबीसों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाता हूँ।
पार्श्वनाथ के पन कल्याणक, हर पल मन मैं ध्याता हूँ॥
अतिशय पूरित जनन हुआ, पारसनाम प्रसिद्ध हुआ।
तेईसवें तीर्थेश महा, मेरु पर अभिषेक अहा॥

पंचम सागर जल आया, सुर समूह क्षण में लाया।
पहले जन्मोत्सव सुर से, फिर नगरी में मिल जुल के॥
जन्म महाकल्याणक अवसर, भव्य जीव मन भाता है।
जनन मरण का फेर निवारो, भाव यही बस आता है॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौषकृष्णैकादश्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सहजपरिणतिं गतान् सुसिद्धान्
प्रणमति युग्म - करेण केशलुञ्चम्।
यमनियम - पयोधिवर्धितात्मा
प्रकटितसत्यगमः स जातरूपः॥१००॥

चौबीसों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाता हूँ।
पार्श्वनाथ के पन कल्याणक, हर पल मन मैं ध्याता हूँ॥
जब दीक्षा को ग्रहण किया, सिद्ध समूह प्रणाम किया।
सहज परिणति अपनाये, केशलोंच कर हर्षाये॥
नियम यमों को साध लिया, चौथा ज्ञान सुप्राप्त किया।
सामायिक संयम आधार, क्षमा दया गुण अपरम्पार॥
जिनवर का दीक्षा कल्याणक, संयम याद दिलाता है।
भाव भक्ति से प्रभु दर्शन का, पुण्य बढे मन आता हैं॥

ॐ ह्रीं अर्हं पौष कृष्णैकादश्यां तपःकल्याणक - प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कमठचररिपुः स शम्बरः खे
जिनहरिताभतनुं विलोक्य गच्छन्।
द्रुतमनवरतं कृतोपसर्गो
निजरमणाल्लघु केवली हि पार्श्वः॥१०१॥

चौबीसों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाता हूँ।
पार्श्वनाथ के पन कल्याणक, हर पल मन मैं ध्याता हूँ॥
शम्बर देव कमठ चर है, नभ जाते देखा सुर है।
हरिताभा युत जिन की देह, करन लगा उपसर्ग अनेह॥
निज आतम में ठहर गए, केवलज्ञानी आप भए।
अठ पडिहारों युत शोभा, गणधर नर मोहित आभा॥
केवलज्ञान महा कल्याणक, की पूजा मन लाता हूँ।
पारस प्रभु के युगल चरण में, झुक - झुक अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्र - कृष्ण - त्रयोदश्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जय जय जय पार्श्व! संगतो मे
तव जिन पादयुगं निधाय चित्ते।
अहमपि किल पार्श्वभागवासं
नियमितभक्तिभरेण सिद्ध! कुर्वे॥१०२॥

चौबीसों के चरण कमल में, सादर शीश झुकाता हूँ।
पार्श्वनाथ के पन कल्याणक, हर पल मन मै ध्याता हूँ॥
हे जिन हे पारस प्रभु जय, सिद्ध प्रभू की जय जय जय।
आप चरण चित में रखता, पास आपको मैं लखता॥
नियमित भक्ति करूँगा तो, भव से पार लगूंगा तो।
इक दिन ऐसा आयेगा, आप पास बस जाएगा॥
है निर्वाण महा कल्याणक, पारस प्रभु का वंदन है।
श्री सम्मेद शिखर जी जाके, बार बार अभिनंदन है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रावण - शुक्ल - सप्तम्यां मोक्षकल्याणक - प्राप्ताय श्रीपार्श्वनाथ - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

२४ - महावीर - स्तुतिः

पिता नामः राजा सिद्धार्थ

माता नामः रानी त्रिशला

जन्म स्थानः कुण्डलपुर

निर्वाण स्थानः पावापुर (पद्मसरोवर)

चिन्हः सिंह

वर्णः स्वर्ण

कैवल्यवृक्षः शाल

प्रथम गणधरः इन्द्रभूति

कल्याणक तिथि

गर्भः आषाढ़ शुक्ल षष्ठी

जन्मः चैत्र शुक्ल त्रयोदशी

तपः मार्गशीर्ष कृष्ण दशमी

केवलज्ञानः वैशाख शुक्ल दशमी

मोक्षः कार्तिक कृष्ण अमावस्या

२४ - महावीर - स्तुतिः

(छन्द - पृथ्वी)

नृपो भुवि विदेहकुण्डपुरसंस्थसिद्धार्थकः
प्रसन्नमतिमानिनी प्रियसुकारिणी यस्य वै।
तयोर्हि तनयः प्रसिद्धिमिह वर्धमानो गतः
स गर्भसमये सुरैर्विहितपूजनैरर्चितः ॥१०३॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥
देश विदेह कुण्ड ग्रामा, सिद्धारथ नृप की रामा।
प्रियकारिणि भी त्रिशला भी, कला गुणों में कुशला थी॥
वर्धमान सुत गर्भ हुआ, अद्भुत पुण्य प्रसिद्ध हुआ।
गर्भ समय से पूजा को, यशः कीर्ति शिशु पाया वो॥
गर्भसमय की अद्भुत वेला, सबको मंगलकारी हो।
सब मिलकर अब हर्ष मनाते, जय जय प्रभू तुम्हारी हो॥

ॐ ह्रीं अर्हं आषाढ़ - शुक्ल - षष्ठ्यां गर्भकल्याणक - प्राप्ताय श्रीवर्धमान - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवज्जननपूजनं विदितलोकमाहात्म्यकं
सुखं वितरतीह सर्वजनमध्यमात्यन्तिकम्।
ममापि जिनदेव! संसृतिगतस्य ते भक्तितो
भवेषु निखिलेषु मंक्षु हि भवो भवेदन्तिमः ॥१०४॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब - खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥

आप जन्म की महिमा तो, जाने लोक अशेष अहो।
सभी जनों में हो विख्यात, सुख दाता हो सबके तात॥
मुझे छोड़ प्रभु कहाँ गए, आप भक्ति में समा गए।
मेरा यह अंतिम भव हो, ऐसी भक्ति का फल हो॥
जनम महा कल्याणक का मैं, मंगल पाठ सुनाता हूँ।
जिनवर की महिमा गा करके, पूजन अर्घ चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं अर्हं चैत्रशुक्ल - त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक - प्राप्ताय श्रीवर्धमान - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाव्रत - सुगुप्तिसंसमितिपूर्णरत्नत्रयं
त्रयोदशविधं चरित्रमपि भेददृष्ट्यात्मकम्।
अभेदनयतो निजानुरमणं परं दृश्यते
विरोधलवमात्रमत्र न भवेदनेकान्ततः॥१०५॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब - खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥
गुप्ति समिति युत महाव्रती, तेरह विध चारित्र कृती।
भेद दृष्टि का संयम ले, प्रति पल आतम दृष्टि पले॥
नय अभेद से आत्म रमण, मन आतम में किया दमन।
दो नय से संयम अविरोध, आप योग त्रय करते रोध॥
दीक्षा कल्याणक की महिमा, लौकांतिक से आती है।
धन्य घड़ी वह धनि बुद्धि वह, भाव विराग जगाती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं मार्गशीर्ष - कृष्ण - दशम्यां तपःकल्याणक - प्राप्ताय श्रीवर्धमान - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनन्तमखिलं नितान्तरहितेन्द्रियं प्रापितं
सुखं निजगतं विरागजनितं सुविज्ञानजम्।

त्वया भगवता ततो ह्यभिमता तु सर्वज्ञता
तव स्तुतिकृते सुदूरमपि नो ममाज्ञानता॥१०६॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब - खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥
निजगत जनित विराग सुखी, केवलज्ञान महान सुधी।
आप अनन्त ज्ञेय ज्ञाता, इन्द्रिय ज्ञान रहित त्राता॥
आप हुए सर्वज्ञ महान, स्वीकृत मम मति में तब ज्ञान।
तब थुति करने ना संदेह, इसीलिए तव पद से नेह॥
केवल ज्ञान महाकल्याणक, की पूजा मन भाती है।
राजगृही में समोशरण की, याद आपकी आती है॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैशाख - शुक्ल - दशम्यां केवलज्ञान - प्राप्ताय श्रीवर्धमान - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कृपां कुरु जिनेश रक्ष भवतो हि सर्वेश भोः!
न वै परममित्रमत्र मम कौ परं विद्यते।
प्रणम्य - पदपङ्कजं जिन! मया हि विद्यागुरोः
प्रणम्यत इहापि शिष्यमुनिनाऽर्हमायोगिना॥१०७॥

चौबीसों की संस्तुति करने, खूब - खूब मन आता है।
वर्धमान जिनवर से मेरा, बहुत पुराना नाता है॥
आप जिनेश बने सर्वेश, पल - पल भव - भव में जिन भेष।
परम मित्र धरती पर आप, मान बना हूँ मैं निष्पाप॥
पद पंकज नित आप प्रणम्य, रखा गुरु ने नाम 'प्रणम्य'।
विद्यासागर गुरु महान, अर्हं योगी करता ध्यान॥

मोक्ष महाकल्याणक प्रभु का, दीपोत्सव जगमग करता।
भारत पूर्ण अहिंसा मय हो, वीर प्रभू आदर करता॥

ॐ ह्रीं अर्हं कार्तिक - कृष्णामावस्यायां मोक्ष - कल्याणक - प्राप्ताय श्रीवर्धमान - जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अनुष्टुप्)

(प्रशस्ति)

अष्टगतिव्रतद्वन्द्वे वीरनिर्वाणवत्सरे।
वर्षायोगे पनागरे कृष्णाष्टमीदिने पूर्णम्॥
चतुर्विंशतिजैनानां तीर्थंकरजिनेशिनाम्।
भक्त्या विरचितं शक्त्या संस्तोत्रशतकं मया॥१०८॥

(पुष्पांजलि)

जयमाला

ऋषभदेव से वर्धमान तक, चौबीसों को ध्याता हूँ।
भाग्यवान हूँ पुण्यवान हूँ, जिन संस्तुति मन लाता हूँ॥

ऋषभदेव जिन मेरे हैं, सुर नर जिनको घेरे हैं।
अजितनाथ जित जन्म बने, संभव भव का संघर्ष हने॥१॥
अभिनन्दन गुण गण मण्डित, सुमति देव मति है पण्डित।
पद्म प्रभु क्यों भूला है, जाग्रत मन सुख झूला है॥२॥
ओ सुपार्श्व जिन पास रहो, चन्द्रप्रभू मम साथ गहो।
पुष्पदन्त जिन दान्त बने, शीतल शान्त प्रशान्त घने॥३॥

श्रेयोजिनवर श्रेष्ठ यहाँ, वासुपूज्य सा पूज्य कहाँ।
विमल चेतना निर्मल हैं, जो अनन्तजित् जितमल हैं॥४॥
धर्म धर्मचक्री नेता, शांति कामना के जेता।
कुन्थुनाथ त्रिक पदवी घृत, श्री अरनाथ पापमलहृत्॥५॥
मल्लिनाथ हैं महाबली, मुनिसुव्रत से राह मिली।
श्री नमिनाथ अनाथों के, नेमि हितंकर पात्रों के॥६॥
पार्श्वनाथ का दर्श मिला, वर्धमान जग कमल खिला।
चौबीसों की जयमाला, शब्दों की सुख वरमाला॥७॥
चौबीसों के चरण कमलों में, युगपत अर्घ चढ़ाता हूँ।
सिद्ध एक से चौबीसों हैं, पृथक् - पृथक् भी ध्याता हूँ॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऋषभादि वर्धमान - पर्यन्त - चतुर्विंशति - तीर्थंकरेभ्यो नमः अन - र्घ्यपद - प्राप्तये जयमाला - पुर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों की संस्तुति करके मैं प्रणम्य बन जाता हूँ।
विद्यागुरु से ज्ञान मिला है उनको शीश नमाता हूँ॥
संवत वीर प्रभु निर्वाण मोक्ष गये जब श्री भगवान।
पच्चीस सौ अड़तालीस पूर्ण हुई संस्तुति जिन ईश॥
कृष्ण अष्टमी का दिन था वर्षायोग पनागर था।
तीर्थंकर चौबीसों की संस्कृत हिंदी संस्तुति की॥
हैं चौबीसों देव महान भक्ति से गाया गुणगान।
शतक रचा यह शक्ति से भिन्न छन्द हर्षितमति से॥
चौबीसों के चरण कमल में पुष्पांजलि चढ़ाता हूँ।
भव - भव में जिन भक्ति पाऊँ भाव यही उर लाता हूँ॥

****

समुच्चय महार्घ

मैं देव श्री अरहन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों॥
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ, द्वादशांग रची गनी।
पूजूँ दिगम्बर गुरु चरण शिव, हेत सब आशा हनी॥
सर्वज्ञ भाषित धर्म दश - विधि, दयामय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्नत्रय, जा बिना शिव नहिं कदा॥
त्रैलोक्य के कृत्रिम अकृत्रिम, चैत्य चैत्यालय जजूँ।
पंचमेरु नन्दीश्वर जिनालय, खचर सुर पूजित भजूँ॥
कैलाश श्री सम्मेद गिरी, गिरनार गिर मैं पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि, और तीरथ सर्वदा॥
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस - वसु जय, होय पति शिवगेह के॥
दोहा - जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहु विधि भक्ति बढ़ाय॥

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववन्दना त्रिकालपूजा त्रिकालवन्दना करै करावै भावना भावै श्रीअरहन्त जी, सिद्ध जी, आचार्य जी, उपाध्याय जी, सर्व साधु जी नमः। पंच - परमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन विशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चारित्रेभ्यो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर नगरी विषै, उर्ध्वलोक, मध्यलोक, पाताल लोक विषै, पाँच भरत, पाँच ऐरावत दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जि-नबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिन - चैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। श्री सम्मेद शिखर, कैलाश,

चम्पापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिरि, तारंगा, मथुरा आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूडबदी, देवगढ़, चन्देरी, पपौरा, हस्तिनापुर, अयोध्या, राजगृही, तारंगा, चमत्कार, महावीर जी, पद्मपुरी, तिजारा, अंतरिक्ष पार-सनाथ, बगासपुर, मक्सी आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण ऋद्धि-धारी सप्त परमर्षिभ्यो नमः । श्रीजिन सहस्रनामेभ्यो नमः। (अपने नगर का नाम) नगर में स्थित समस्त जिनमन्दिर, जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः अनर्घ्य - पद प्राप्तये सम्पूर्ण अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील गुण - व्रत संयम - धारी।
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमल - दल लाजै॥
पंचम चक्रवर्ति पद - धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र - नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्ति - हित शान्ति विधायक॥
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामण्डल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजों सिरनाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़े तिन्हें पुनि चार संघ को॥

पूजें जिन्हें मुकुट - हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शान्ति को दे॥
होवै सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवै वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अन्देशा॥
होवै चोरी न जारी, सुसमय वरतै हो न दुष्काल मारी।

सारे ही देश धारै, जिनवर वृषको जो सदा सौख्यकारी॥
घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज॥

(अब हाथ जोड़कर भगवान् से प्रार्थना करें)

शास्त्रों का हो पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वतों का सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का॥
बोलूँ प्यारे वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तोलों सेऊँ चरण जिनके, मोक्ष जो लों न पाऊँ॥
तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहूँ प्रभु, जबलौं न पाया मुक्ति पद मैंने।
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि पुनि छुड़ाहु भव दुःख से॥
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥

पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरण होय॥1॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करो भगवान्॥2॥
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥3॥
आये जो - जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।

ते अब जावहुँ कृपाकर, अपने - अपने थान॥4॥
श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव - भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय॥

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें)

परिक्रमा विनती (जिनस्तुति)

मैं तुम चरण - कमल गुणगाय, बहु विधि भक्ति करी मन लाय।
जनम जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि॥
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरण मिटावो मोहि।
बार - बार मैं विनती करूँ, तुम सेवा भवसागर तरूँ।
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्यो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव॥
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ मैं शीश, मुझ अपराध क्षमहू जगदीश॥

(दोहा)

सुख देना दुःख मेटना यही आपकी बान।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्ये भगवान्॥
पूजन करते देव की, आदि मध्य अवसान।
सुरगन के सुख भोगकर, पावै मोक्ष निदान॥
जैसी महिमा तुम विषै, और धरै नहिं कोय।
सूरज में जो जोति है, नहिं तारागण होय॥
नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिन मांहि पलाय।
ज्यों दिनकर प्रकाश तें, अंधकार विनशाय॥
बहुत प्रशंसा क्या करुं, मैं प्रभु बहुत अज्ञान।
पूजाविधि जानूँ नहीं, शरण राखि भगवान्॥

(नौ बार णमोकार मन्त्र का जाप करें)